Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 4

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

26 जनवरी 2017 ई

27 रबीउस्सानी 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

इस्लाम के स्वीकार करने से नूर के चश्मे मेरे अंदर बह रहे हैं मुझे दिखलाया और बतलाया गया और समझाया गया है कि दुनिया में केवल इस्लाम ही सच्चा है

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मैं देखता हूँ कि इस्लाम के स्वीकार करने से नूर के चश्मे मेरे अंदर बह रहे हैं और केवल रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत के कारण वे उच्च स्थान इलाही संवाद और दुआओं की कुबूलियत का मुझे मिला है कि सिवाय सच्चे नबी के आज्ञाकारी के और किसी को प्राप्त नहीं हो सकेगा और यदि हिंदू और ईसाई आदि अपने मिथ्य देवताओं से दुआ करते करते मर भी जाएं तब भी उन्हें वह स्थान नहीं मिल सकता और वह इलाही कलाम जो अन्य ज़न्नी रूप मानते हैं उस को सुन रहा हूँ और मुझे दिखलाया और बतलाया गया और समझाया गया है कि दुनिया में केवल इस्लाम ही सच्चा है और मेरे पर प्रकट किया गया कि यह सब कुछ हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशीर्वाद तथा पालन से तुझ को मिला है और जो कुछ मिला है उसकी मिसाल दूसरे धर्मों में नहीं क्योंकि वह मिथ्य पर हैं। अब अगर कोई सच्चाई का इच्छुक है, चाहे वह हिंदू है या ईसाई या आर्य या यहूदी या ब्रह्मो या कोई और है इस लिए यह ख़ूब अवसर है जो मेरे विरुद्ध खड़ा हो जाए तो वह भविष्य के मामलों के प्रकट होने और दुआओं के स्वीकार होने में मेरा मुकाबला कर सका तो मैं सामर्थयवान अल्लाह की कसम खाकर कहता हूँ कि अपनी सारी अचल संपत्ति जो दस हज़ार रुपए के करीब होगी उस को दूंगा, जिस रूप से उसकी तसल्ली हो सके इसी रूप से अदा करने में उसे तसल्ली दूँगा ।

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी खज़ायन, भाग 5, पृष्ठ 276)

☆ ☆ ☆

122 वां जलसा सालाना कादियान 2016 ई की संक्षिप्त रिपोर्ट (शुरू जलसा से 125 वां साल)

अहमदियत के केंद्र कादियान दारुल अमान में 122 वें जलसा सालाना का सफल और मुबारक आयोजन

मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया द्वारा सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना में सम्मिलित लोगों से अन्तिम सत्र में ईमान वर्धक संबोधन

*** 42 देशों से मेहमानों की भागीदारी, 14,242 अहमदियत के परवानो का जलसा में शामिल होना**

*** हुज़ूर अनवर के समापन भाषण के अवसर पर लंदन में 5,230 अहमदियत के परवानों का शामिल होना**

***नमाज़ तहज्जदु* दर्स कुरआन और ज़िक्रे इलाही से परिपूर्ण माहौल * उलमाए कराम की ज्ञान वर्धक तकारीरें *जलसा सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन *महमानों की परिचयात्मक तकारीरें * देशी तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद *अहबाब जमाअत की जानकारी बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण मामलों में वृद्धि के लिए वृत्तचित्र और विभिन्न सूचना सम्बन्धी प्रदर्शनी का आयोजन *नए अहमदियों और मित्रों के लिए तब्लीग़ी जलसा * 26 निकाहों के एलाना *प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसा की व्यापक कवरेज *शान्तिमय और सुखद मौसम में जलसा की सारी कार्रवाई का पूरा होना* अलकलम परियोजना का आयोजन *जमाअत अहमदिया इंडोनेशिया से 183 व्यक्ति चार्टर्ड जहाज़ द्वारा जलसा में शामिल हुए। (भाग-1)**

कार्यकर्ताओं का निरीक्षण

अल्हम्दो लिल्लाह कि जलसा सालाना कादियान 2016 ई से संबंधित कार्यकर्ताओं का निरीक्षण दिनांक 22 दिसंबर 2016 ई को हुआ। हुज़ूर अनवर के प्रतिनिधि मुहतरम मौलाना मोहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला और अमीर मकामी कादियान ने ठीक 10 बजे अहमदिया ग्राउंड में कार्यकर्ताओं से हाथ मिला कर किया। जलसा से सभी कार्यकर्ता समय से पहले ही लाइनों में खड़े हो चुके थे। औरतों को भी पर्दे की छूट से इस समारोह में शामिल होने का प्रबंध था।

मंच पर प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर के साथ आदरणीय शोएब अहमद साहिब (अफसर जलसा सालाना), साहिब मुज़फ्फर अहमद नासिर साहिब (अफसर जलसा गाह),साहिब रफीक अहमद बैग साहिब (अफसर ख़िदमत ख़लक), आदरणीय हाफिज़ मख़दूम शरीफ साहिब, आदरणीय मुहम्मद नसीम ख़ान साहिब , आदरणीय ताहिर अहमद तारिक साहिब (उप अधिकारी जलसा स्थल) आदरणीय अब्दुल वकील नियाज़ साहिब, आदरणीय हाफिज़ मज़हर अहमद साहिब, आदरणीय मज़हर अहमद वसीम साहिब, आदरणीय एम अबू बकर साहिब, आदरणीय हबीब रहमान खान साहिब और आदरणीय फरीद अहमद इंजीनियर साहिब (उप अधिकारी जलसा सालाना) मौजूद थे।

तिलावत कुरआन आदरणीय मुरशिद अहमद डार साहिब मुरब्बी सिलसिला ने की। आप ने सूर: अलबक़रा: के अंतिम रुकूअ की तिलावत और अनुवाद भी पेश किया।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के प्रतिनिधि ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। आपने कहा कि हमारा यह जलसा सालाना इलाही जलसा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इसके लिए क़ौमें तैयार हैं जो शीघ्र ही इसमें आ मिलेंगी। आने वाले सभी मेहमान केवल अल्लाह तआला के लिए इस जलसा के लिए आ रहे हैं इसलिए उन के

शेष पृष्ठ 2 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पृष्ठ 1 का शेष

आराम का हर संभव ख्याल रखना हमारा फर्ज़ है। हम इस जलसा की तैयारी के लिए यहाँ इकट्ठा हैं दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमें यथा सम्भव इस ज़िम्मेदारी को निभाने की ताकत प्रदान करे। आपने कहा कि सम्मेलन की व्यवस्था के तीन विभाग हैं । निवास तथा खाना। नमाज़ें, दर्स और जलसा के भाषणों आदि और समाज सेवा।

आप ने जलसा के कार्यकर्ताओं को डयूटियों से संबंधित कुछ मामलों की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा:

*प्रत्येक स्वयं सेवी अपनी ड्यूटी पर मौजूद रहे और पूरी ज़िम्मेदारी से निभाए। लापरवाही करने वालों को आयोजक प्यार से ध्यान दिलाएं। * समस्त स्वयं सेवकों का कर्तव्य है कि जो भी संसाधन हैं उनसे लाभ उठाते हुए पूरी ज़िम्मेदारी से डयूटयाँ निभाते हैं। *निवास स्थान कमरों और ग़ुसल खानों आदि की सफाई का विशेष ध्यान रखें इन की हर समय निगरानी होती रहनी चाहिए। *सैक्योरटी के बारे में भी आपने ध्यान दिलाया और फ़रमाया हुज़ूर अनवर हमेशा यह ध्यान दिलाते रहते हैं कि यह क्षेत्र बहुत महत्त्वपूर्ण है। ज़िम्मेदारी, जागरूकता और मोमिनाना कुशलता के साथ यह ड्यूटी दें। *तमाम डयूटियाँ बहुत ख़ुशी से अदा करें ताकि किसी भी मेहमान को बुरा न लगे। *हर क्षेत्र के प्रशासक या उप व्यवस्थापक में से कोई एक बहरहाल मौके पर मौजूद रहे। *तमाम आयोजकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि हालांकि ये देश का जलसा है लेकिन हर साल यह नज़ारा देख सकते हैं कि विभिन्न देशों के लोग यहां आते हैं। इन को गाइड करना बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। * हुज़ूर अनवर की दुआएं और मार्गदर्शन हमारे साथ हैं। आप से सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तृत मार्गदर्शन प्राप्त हो रही है। ज़रूरत इस बात की है कि हम अल्लाह तआला का शुक्र करें कि हमें सेवा का मौका मिला है। पूरी ज़िम्मेदारी से यह कुछ दिन गुज़ारें। अल्लाह तआला से दुआ है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ आने वाले मेहमानों और हम सब के पक्ष में पूरी हों।

अंत में आप ने हुज़ूर अनवर की जलसा सालाना से संबंधित कुछ हिदायतें पढ़ कर सुनाईं जो हुज़ूर अनवर ने निरीक्षण कार्यकर्ता जलसा सालाना यू.के 2016 के अवसर पर वर्णन की थीं। हुज़ूर अनवर ने कहा कि "जो भी काम हम करते हैं अल्लाह तआला की लिए करते हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमानों के लिए करते हैं। इसलिए इस उद्देश्य के लिए, अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए कार्यों के साथ साथ हमारे आचरण भी अच्छे होने चाहिए और हमेशा हमें मुस्कुराते चेहरे के साथ सेवा करनी चाहिए। मानव काम और प्रशासनिक कार्यों में कमियां रह जाती हैं और सुधार की गुंजाइश हमेशा होती है। लेकिन फिर भी जिस तरह हम अपने कामों में, व्यवस्था में सुविधाएं और संवर्द्धन पैदा करते चले जा रहे हैं उसी तरह हमें अपने आचरण के मानकों को भी बुलंद करते चले जाने की ज़रूरत है।

आमतौर पर अल्लाह तआला की कृपा से सब कार्यकर्ता बड़ी ख़ुशी से काम करते हैं और लोग आप के कामों से बड़े प्रभावित भी होते हैं। लेकिन कई बार एकाध की ग़लती पूरी टीम पर दाग या धब्बा लगा देने वाली होती है। इसलिए हर सहयोगी, हर कार्यकर्ता, उपाध्यक्ष भी, अफसर भी इस बात का ध्यान रखने वाले होने चाहिए कि कहीं भी कोई ऐसी बात न हो जो किसी मेहमान के लिए परेशानी का कारण बने। या कोई ऐसी बात न हो जिससे प्रशासनिक त्रुटि नज़र आए चाहे कुछ मिनट के लिए हो। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को यह भी याद रखना चाहिए कि वह हमेशा मुस्कुराते चेहरे के साथ अच्छी नैतिक के साथ यह सेवा करनी है। अल्लाह तआला आप सभी को इसकी ताकत भी प्रदान करे।

सुरक्षा के बारे में फरमाया प्रत्येक कार्यकर्ता का भी कर्तव्य है कि अपने क्षेत्र में हर तरफ नज़र रखे और किसी भी मामूली बात से अनदेखी न करे। आजकल अगर किसी बात को कम समझा जाए तो छोटी से छोटी बात भी बड़े नुकसान का कारण बन जाती है। और दुनिया में जो कुछ मानवता के नाम पर बट्टा लगाने वाले लोग, वो लोग जो इस्लाम के नाम पर अत्याचार कर रहे हैं इंसानी जानों को बर्बाद कर रहे हैं, वे छोटी कमियों की खोज में रहते हैं कि जहां कमी नज़र आए, वहाँ नुकसान पहुंचाया जाए।

हमेशा यह याद करवाने भी ज़रूरत पड़ती है क्योंकि बहुत सारे कार्यकर्ता ऐसे हैं जो नमाज़ के समय जमाअत के साथ नमाज़ अदा नहीं कर सकते। फिर अपने अपने क्षेत्र में अधिकारियों को इस बात पर अमल कराना चाहिए कि उनके क्षेत्र में जहां जहां उनके कार्यालयों या इससे क़रीब जो भी कार्यकर्ता हैं जब समाप्त हो तो बा जमाअत नमाज़ पढ़ा करें। क्योंकि हमारे काम बिना दुआओं के अदा नहीं हो सकते और इस बात से हमें, प्रत्येक को हर समय ध्यान देना चाहिए और यही हमारी सफलता और तरक्की का रहस्य है कि अल्लाह तआला का फज़ल हमारे साथ होता है और अल्लाह तआला के फज़ल को अवशोषित करने के लिए उसके सामने झुकना भी आवश्यक है।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल, 26 अगस्त 2016, पृष्ठ 10)

दुआ के साथ कार्यकर्ताओं का निरीक्षण समारोह संपन्न हुआ और नियमित जलसा सालाना की डियूटियां शुरू हुईं।

26 दिसंबर 2016 (सोमवार) पहला दिन- पहला सत्र

सुबह काफी कोहरा होने के बावजूद अहमदियत के आशिक़ जलसा से एक घंटा पहले ही सुरक्षा के कई चरणों से गुज़रते हुए धैर्य के साथ जलसा स्थल में दाख़िल हुए। सुबह ठीक दस बज कर पांच मिनट पर हज़ूर अनवर प्रतिनिधि आदरणीय मौलाना जलालुद्दीन नय्यर साहिब सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान ने लिवाए अहमदियत लहरा कर दुआ करवाई। जिस के बाद स्टेज से नारे बुलंद हुए जिन का जोश के साथ लोगों ने जवाब दिया।

आदरणीय मौलाना जलालुद्दीन नय्यर साहिब सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान ने इस बैठक की अध्यक्षता फ़रमाई। तिलावत कुरआन से जलसा की शुरुआत हुई। आदरणीय तारिक अहमद लोन साहिब ने सूरा: अलअनबिया की आयत नंबर 20 से 26 की तिलावत और अनुवाद भी पढ़कर सुनाया। बाद ही सदर जलसा ने संबोधन फरमाया।

आप ने सभी जलसा सालाना में शामिल होने वालों को जलसा सालाना की मुबारकबाद पेश करते हुए जलसा सालाना के उद्देश्य बयान किए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुल्फाए किराम के उपदेशों के प्रकाश में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत के उद्देश्य और हमारी ज़िम्मेदारियों की ओर ध्यान दिलाया। अपने संबोधन के अंत में आप ने वार्षिक इजतिमा मजलिस अंसारुल्लाह भारत 2016 ई के अवसर पर प्राप्त हुए हुज़ूर अनवर का संदेश पढ़कर सुनाया जिसमें हुज़ूर अनवर ने ख़िलाफत से मज़बूत संबंध स्थापित करने की नसीहत फ़रमाई है। ख़िताब के अंत में सदर महोदय ने दुआ करवाई और जलसा का पहला सत्र शुरू हुआ। इसके बाद आदरणीय ख़ालिद वालिद साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

वह देखता है ग़ैरों से क्यों दिल लगाते हो
जो कुछ बुतों में पाते हो उसमें वह क्या नहीं

अच्छी आवाज़ से पढ़कर सुनाया।

इसके बाद आदरणीय मौलाना ज़हीर अहमद ख़दिम साहिब नाज़िर दाअवत इलल्लाह जुनूबी हिन्द ने "विभिन्न और धर्मों में तौहीद बारी तआला" के विषय पर भाषण दिया। आप ने सूर: आले इमरान की आयत 65 की रोशनी में कहा कि ख़ुदा तआला को पहचानने के लिए सबसे पहले उसकी ज़ात और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। आपने हज़रत मसीह मौऊद के एक उद्धरण के हवाले से कहा कि वास्तवित तौहीद के तीन किस्में हैं। प्रथम ज़ात के बारे में द्वितीय विशेषताओं के आधार पर तीसरा अपनी मुहब्बत और ईमानदारी और वफादारी के मामले में किसी को साझी न गिनना और इसी में खो जाना। आप ने हिन्दू धर्म, ईसाई, सिख धर्म और इस्लाम की रोशनी में एकेश्वरवाद का वर्णन कर के इस संबंध में हज़रत मसीह मौऊद हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के उपदेशों को पेश किए और कहा कि दुनिया में शांति की स्थापना के लिए आवश्यक है कि ख़ुदा तआला पर पूर्ण ईमान हो और तौहीद को स्वीकार किया जाए। आख़िर में किश्ती नूह से एक उद्धरण पेश करके आप ने तकरीर को समाप्त किया।

इस बैठक की दूसरी तकरीर आदरणीय मौलाना मुहमद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला तथा अमीर स्थानीय कादियान ने "सीरत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व इंसाफ़ की रोशनी में " के विषय पर की। आप ने सूर: अलमाइद: आयत 9 की तिलावत की और कहा कि कुरआन में न्याय के लिए दो शब्द अदल और किस्त का इस्तेमाल हुआ है। दो आदमियों में समान व्यवहार को न्याय कहा जाता और "किस्त" दूसरे से तुलना के साथ होता है। आप ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेसत से पहले की स्थिति और अत्याचार का ज़िकर किया और कहा कि आपने ने बर्बरों को ख़ुदानुमा मनुष्य बनाया। इस संदर्भ में आपने हज़रत मसीह मौऊद के कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए। इसी प्रकार घरेलु जीवन में आपके अदल

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

रबीउल अव्वल का महीना वह महीना है जिसमें हमारे आक़ा और मालिक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ लेकिन अफसोस है मुसलमानों की स्थिति पर कि मनाते तो यह दिन मानवता के उपकारक और रहमतुन लिल आलमीन के जन्म की ख़ुशी में हैं लेकिन आपस में मुसलमान قُلُوْبُهُمْ شَتّٰى (अलहशर :15) कि उनके दिल फटे हुए हैं, के मिसदाक़ बने हुए हैं। प्राय एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हैं। दैनिक ख़बरें आती हैं सैंकड़ों मुसलमान मुसलमानों के हाथों कत्ल हो रहे हैं अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर यह सब कुछ बहुत बेशर्मी और निर्लज्जता से किया जा रहा है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस स्थिति का नक्शा खींचकर बताया था कि इस स्थिति में इस्लाम का दर्द रखने वाले मुसलमान निराश न हों ऐसे समय में मसीह मौऊद और महदी मौऊद आ आएगा जो अपने आक़ा के ग़ुलाम के रूप में मुसलमानों को भी, ग़ैर मुस्लिमों को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से सूचित करेगा और इस्लाम की सुंदर और चमकदार शिक्षा से दुनिया को रोशन करेगा और फिर से उम्मत वाहिदा (एक उम्मत) बनाएगा।

हर मुसलमान की यह आस्था है कि और इस पर पूर्ण ईमान के बिना कोई मुसलमान कहला ही नहीं सकता कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन हैं और आप पर शरीयत पूरी हो चुकी है लेकिन यह उपद्रवी मौलवी साधारण जनता की भावनाओं को इस बात से भड़काते हैं कि अहमदी ख़त्मे नबुव्वत पर ईमान नहीं रखते। इस पर सिवाय इन्ना लिल्लाह पढ़ कर लअनतुल्लाह अलल काज़बीन कहा जाए इसके अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता। जो अहमदी कहलाते हुए फिर इस बात पर विश्वास नहीं रखता कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन हैं वह अनैतिक संकीर्ण और इस्लाम से बाहर है और जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का ऐसे व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है। हां यह बात ज़रूर है कि अहमदी ख़त्म नबुव्वत की वह व्याख्या करते हैं जो ख़ुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाई थी और जिसे कुरआन में भी अल्लाह तआला ने उल्लेख किया। कि अब कोई नबी नहीं आ सकता जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी और आप की लाई हुई शरीयत से बाहर हो।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों, उलमा तथा बुज़ुर्गान के हवालों और विशेषतः हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मआरिफ वाले, ज्ञान वर्धक उपदेशों की रौशनी में ख़त्मे नबुव्वत और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च मकाम का वर्णन।

12 रबीउल अव्वल को लेकर नामूसे रिसालत और ख़त्म नबुव्वत के नाम पर पाकिस्तान में चार दिन पहले दोलमियाल में औबाशों और मौलवियों ने इकट्ठे होकर जुलूस निकाला हमारी मस्जिद पर हमला किया।

सारे संसार में जमाअत अहमदिया की तरफ से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत तय्यबः के बारे में विभन्न कान्फ्रंसों के आयोजन और मुस्लिम तथा ग़ैर मुस्लिम आदमियों को रहमतुन लिल्आलमीन के हालात से परिचित करने की मुहिम और इस के नेक प्रभावों का ऐतिहासिक वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 16 दिसम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

हम आजकल इस्लामी महीने 'रबीउल अव्वल' से गुज़र रहे हैं। इस्लामी दुनिया विशेष रूप से पाकिस्तान तथा भारत में इस महीने का महत्त्व इसलिए है वैसे तो सारी इस्लामी दुनिया में है लेकिन यहां विशेष रूप से इसे बड़ा मनाया जाता है कि बारह तारीख़ को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ। एक अनुसंधान यह कहता है। फिर हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ने 'सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन' में लिखा है कि एक मिस्री विद्वान के अनुसंधान के अनुसार 9 रबीउल अव्वल बनती है।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 93)

बहरहाल रबीउल अव्वल का महीना वह महीना है जिसमें हमारे आक़ा और मालिक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ लेकिन अफसोस है मुसलमानों की स्थिति पर कि यह दिन मनाते तो मानवता के उपकारक और रहमतुन लिल आलमीन के जन्म की ख़ुशी में हैं लेकिन आपस में मुसलमान قُلُوْبُهُمْ شَتّٰى (अलहशर :15) कि उनके दिल फटे हुए हैं, के मिसदाक़ बने हुए हैं। अल्लाह तआला तो मुसलमानों के आपस के संबंध में यह विशेषताएं वर्णन करता है कि رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ (अल्फतह: 30) कि आपस में बहुत अधिक रहम करने वाले हैं लेकिन यह रहम तो दूर की बात है प्राय एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हैं। दैनिक ख़बरें आती हैं सैंकड़ों मुसलमान मुसलमानों के हाथों कत्ल हो रहे हैं और यही बातें ऐसी है जो अल्लाह तआला और उसके रसूल को सख्त नापसंद है। अगर अपने तौर पर जुल्म कर रहे हैं तो करें लेकिन यही चीज़ है जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर हो रही है। मुसलमान मुसलमान को मार रहा है और अल्लाह तआला और रसूल के नाम पर कत्ल कर रहा है। वह ख़ुदा जो सारे संसारों का रब्ब है और रहमान रहीम है वह रसूल जो रहमतुल्लिल आलमीन है उनके नाम पर अत्याचार और बर्बरता के उदाहरण स्थापित करके लाचारों, महिलाओं, बच्चों, मासूमों को घरों से विस्थापित किया जा रहा है नगेंपन और भूख से पीड़ित किया जा रहा है। मानो कि अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर यह सब कुछ बहुत बेशर्मी और निर्लज्जता से किया जा रहा है। अल्लाह तआला तो फरमाता है कि एक मुसलमान का जान बूझकर कत्ल करना तुम्हें जहन्नम में ले जाएगा किसी भी निर्दोष की हत्या से तुम जहन्नम की आग से बच नहीं सकते लेकिन यह धार्मिक ठेकेदार और स्वार्थी लीडर सरल और कम ज्ञान मुसलमानों को जन्नत का लालच देकर इस प्रकार के काम में झोंकते चले जा रहे हैं। इस्लाम को इस कदर उन लोगों ने बदनाम कर दिया है कि आज ग़ैर मुस्लिम दुनिया में इस्लाम के नाम पर पहली कल्पना जो ग़ैर मुसलमानों के दिमाग़ों में उभरती है वह जुल्म व बर्बरता है। हां एक बात है जिस पर यह तथाकथित मुस्लिम नेता इकट्ठे होकर या उल्मा इकट्ठे होकर एक दूसरे से सहयोग की बातें और हिदायत करते हैं और वह बात वह है जिसके ख़िलाफ अल्लाह तआला और उसके रसूल ने आदेश दिया है।

अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि जब मुसलमानों की ऐसी हालत हो जाएगी जब मुसलमानों के दिल आपस में फट जाएंगे قُلُوْبُهُمْ شَتّٰى की हालत होगी मुसलमान एक दूसरे के गले काटेंगे। तथाकथित उल्मा जिनके पास मुसलमान यह समझ कर कि उनके पास मार्गदर्शन है मार्गदर्शन के लिए लोग जाएंगे तो उन उलमा की भी यही हालत होगी कि वह भी इन्हीं कामों में व्यस्त होंगे जो ख़ुदा तआला से दूर ले जाने वाले हैं बल्कि उनकी साधारण लोगों से भी बदतर हालत होगी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि عُلَمَآءُهُمْ شَرُّ مَنْ تَحْتَ اَدِيْمِ السَّمَآءِ अर्थात उलेमा आसमान

के नीचे रहने वाली प्राणियों में से सबसे ख़राब प्राणी होंगे।(अल्जामिअ लेशुअबिल ईमान लिल्बहीकी भाग 3 पृष्ठ 317.318 हदीस 1763 प्रकाशन मक्तब: अर्रशीद बैरूत 2004ई) क्यों? इसलिए फरमाया कि यह फ़ित्ने पैदा करने वाले होंगे। इन में से फ़ित्ने फूटेंगें और यही हम आज उल्मा के बहुमत में देख रहे हैं कि बजाय आग बुझाने के ये लोग आग लगाने वाले हैं। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस स्थिति का नक्शा खींचकर बताया था कि इस स्थिति में इस्लाम का दर्द रखने वाले मुसलमान निराश न हों ऐसे समय में मसीह मौऊद और महदी मौऊद आ आएगा जो अपने आक़ा के ग़ुलाम के रूप में मुसलमानों को भी, ग़ैर मुस्लिमों को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से सूचित करेगा और इस्लाम की सुंदर और चमकदार शिक्षा से दुनिया को रोशन करेगा और फिर से उम्मत वाहिदा (एक उम्मत) बनाएगा लेकिन जैसा कि मैंने कहा इसी बात से यह उलेमा इन्कार कर रहे हैं और लोगों को भी साधारण मुसलमानों को भी ग़लत बातें बताकर फसाद की स्थिति पैदा करने की कोशिश करते हैं लोगों की भावनाओं से खेलते हैं और उन्हें वे बातें फसाद पैदा करने के लिए बताते हैं कि जिनका अस्तित्व ही नहीं है।

हर मुसलमान की यह आस्था है कि और इस पर पूर्ण ईमान के बिना कोई मुसलमान कहला ही नहीं सकता कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन हैं और आप पर शरीयत पूरी हो चुकी है लेकिन यह उपद्रवी मौलवी साधारण जनता की भावनाओं को इस बात से भड़काते हैं कि अहमदी ख़त्मे नबुव्वत पर ईमान नहीं रखते। इस पर सिवाय इन्ना लिल्लाह पढ़ कर लअनतुल्लाह अलल काज़बीन कहा जाए इसके अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता। जो अहमदी कहलाते हुए फिर इस बात पर विश्वास नहीं रखता कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन हैं वह अनैतिक संकीर्ण और इस्लाम से बाहर है और जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का ऐसे व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है। हां यह बात ज़रूर है कि अहमदी ख़त्म नबुव्वत की वह व्याख्या करते हैं जो ख़ुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाई थी और जिसे कुरआन में भी अल्लाह तआला ने उल्लेख किया। कि अब कोई नबी नहीं आ सकता जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी और आप की लाई हुई शरीयत से बाहर हो।

एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अबूबकर इस उम्मत में सबसे बेहतर हैं, सिवाय इसके कि कोई नबी आए।

(कुनज़ुल उम्माल भाग 11 पृष्ठ 251 किताबुल फज़यल ज़िक्रे सहाबा फज़लहूम हदीस 1763 प्रकाशन मक्तब: अर्रशीद बैरूत 2004 ई)

अत: आप ने नबुव्वत का रास्ता बंद नहीं फरमाया लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दायरे से बाहर निकल कर कोई नबी नहीं आ सकता। कोई नई शरीयत नहीं आ सकती और हम अगर हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह और महदी की स्थिति नबी भी मानते हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण ग़ुलामी में रखते हुए मानते हैं और यही पुराने उल्मा का भी तरीका था

अत: शाह वलीउल्लाह देहलवी अपनी किताब 'तफहीमात इलाहिया' मैं लिखते हैं कि "मुझ पर नबी समाप्त किए गए" (यह कथन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है,)इसका मतलब यह नहीं है कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं आएगा जिसे अल्लाह तआला लोगों के लिए शरीयत देकर भेजे।(अत्तफहीमात इलाहिया शाह वली उल्लाह देहलवी जिल्द 2 पृष्ठ 85 मक्तबा हैदरी लाहौर 1967 ई) इसका मतलब सिर्फ यह है कि कोई ऐसा नबी नहीं आएगा जो शरीयत ले कर आए इस के बिना आ सकता है।

इसी तरह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने फरमाया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमल अंबियाअ तो कहो लेकिन यह मत कहो कि आपके बाद कोई नबी नहीं आएगा।

(अद्दुर्रुल मंसूर जिल्द 5 पृष्ठ204 तफसीर सूरह अल्अहज़ाब प्रकाशन दारुल मअरफत बैरूत)

अत: हम अगर मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद मानते हुए नबी का दर्जा देते हैं तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी के कारण। इसलिए उलमा जो समय समय पर साधारण जनता को इस संवेदनशील बात पर उभारते रहते हैं कि अहमदी या जो लोग यह कहते हैं कादियानी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम को नबी मानते हैं तो यह उनकी बातें केवल फित्ना के कुछ नहीं।

पाकिस्तान सरकार को यह बड़ा गर्व है कि उन्होंने 90 वर्षीय उस ज़माने में जब कानून पास हुआ था और अब उसे 125 साल हो गए यह मस्ला खत्म नबुव्वत का मस्ला था उसे हल कर दिया और इस बात पर पाकिस्तान में उलेमा भी और कुछ सरकारी कर्मचारी भी लोगों की भावनाओं को उभारते रहते हैं तो यह तो उनकी वह स्थिति है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी जन साधारण बजाय अपने उन उल्मा की बातें सुनने के ये देखें औ उन को यह देखना चाहिए कि क्या ज़माना इस बात को नहीं चाहता कि एक मुस्लेह आए जिसकी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी और मुसलमानों को उम्मत वाहिदा बनाए। निश्चित रूप से यह ज़माना है और अल्लाह तआला ने अपना वादा पूरा कर दिया है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी पूर्ण और पूरी हो चुकी है लेकिन इन उल्मा ने नहीं मानना क्योंकि उनके मिम्बर और उनकी जो रोटी लगी हुई है वह उन के हाथ से जाती है। यह मुसलमानों को भी भड़काते रहते हैं और पाकिस्तान में जैसा कि मैंने कहा कि देश का कानून भी उन्हें खुली छुट्टी देता है इसलिए समय-समय पर अहमदियों के ख़िलाफ इस आरोप के कारण सभाएं और गाली गलोच भी करते रहते हैं लेकिन यह अनैतिकता और व्यवहार उन मौलवियों को ही मुबारक हों यह तो यह कर सकते हैं अहमदी ऐसी बेहोदगियों का मुकाबला नहीं कर सकते।

12 रबीउल अव्वल को लेकर नामूसे रिसालत और ख़त्म नबुव्वत के नाम पर पाकिस्तान में चार दिन पहले दोलमियाल में औबाशों और मौलवियों ने इकट्ठे होकर जुलूस निकाला हमारी मस्जिद पर हमला किया। मस्जिद के अंदर अहमदी थे अहमदियों ने आने नहीं दिया अंदर दरवाज़ो बंद थे लेकिन पुलिस के कहने पर जब अहमदियों ने दरवाज़े खोले और पुलिस की इस ज़मानत पर की वह मस्जिद की रक्षा करेंगे तो यह फसाद करने वाले मस्जिद में प्रवेश कर गए और पुलिस एक तरफ हो गई और फिर उन्होंने मस्जिद का सामान बाहर निकालकर जलाया और इस प्रकार उन्होंने अपने विचार में में इस्लाम की बहुत बड़ी सेवा की।

बहरहाल हम ने कानून से नहीं लड़ना न हम लड़ते हैं जहां तक भौतिक चीज़ों का सवाल है हमें इसकी कोई परवाह नहीं। ठीक है नुकसान कर दें। हां अपने विश्वास और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूर्ण विश्वास का और तौहीद को अपने दिलों में गाड़ने का जहां तक सवाल है, हम अपनी जानें कुर्बान कर सकते हैं लेकिन इससे हटने वाले नहीं लेकिन हमेशा हम यही कहते आए हैं और उसके लिए कुरबानी भी देते आए हैं कि ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह के एलान से हम पीछे नहीं हटेंगे।

ये लोग तो औपचारिक मीलाद मनाते हैं रसम के तौर पर इक्टठे होते हैं तकरीरें कीं और उन की जो तकरीररें हैं उनमें से भी अधिकांश पाकिस्तान में केवल अहमदियों को गालियां देने के और कुछ नहीं होती। अस्थायी तौर पर यह एक जोश निकाल लेते हैं गन्दी गालियां बकते हैं और यह समझते हैं कि उन्होंने इस्लाम की बहुत बड़ी सेवा कर ली लेकिन वास्तविक सेवा का बीड़ा तो जमाअत अहमदिया ने उस समय उठाया था जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहले दावा किया और आपने यही फरमाया कि तौहीद और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान को स्थापित करने के लिए आया हूँ। पुन: इस्लाम का पुनर्जागरण मेरे माध्यम से होना है और फिर उस समय ख़िलाफत सानिया में जब एक समय में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ ग़ैर मुसलमानों ने अख़बारों और पुस्तकों में बेहूदा बातें कीं। बेहद गंदी भाषा का इस्तेमाल करते हुए लिखना शुरू किया उस समय हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने बड़े पैमाने पर भारत में सीरत सम्मेलन आयोजित कीं और अहमदियों और ग़ैर अहमदी मुसलमानों सब से कहा कि अब यह समय है कि मतभेद छोड़कर इकट्ठे होकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का और इस्लाम की रक्षा करो और व्यापक रूप से आपने इन सम्मेलनों की शुरूआत की बल्कि जो शरीफ़ ग़ैर मुस्लिम थे आप ने ग़ैर मुस्लिमों को भी आमंत्रित किया। मुसलमानों के तो ईमान का हिस्सा है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूर्ण ईमान लाऐं और आप के सम्मान और मर्यादा की रक्षा करें लेकिन हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के परोपकार तो सारी दुनिया पर हैं आप तो रहमतुन लिल आलमीन हैं इसलिए ग़ैर मुस्लिम भी जो शरीफ हैं वे भी आप की सीरत वर्णन करें। इसलिए कई ग़ैर मुस्लिम पढ़े लिखे लोगों ने जिनमें हिंदू भी शामिल थे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी पर अपने लेख पढ़े। कादियान में जब पहला जलसा 1928 ई में हुआ तो उसमें हिंदू कवियों की दो नअतें भी पढ़ी गईं।

(तारीख अहमदियत भाग 5 पृष्ठ 43)

सारे भारत में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी की तहरीक पर सीरत सम्मेलन आयोजित हुए जैसा कि मैंने कहा और बावजूद सैद्धांतिक और विश्वास के मतभेदों के तत्कालीन ग़ैर अहमदियों ने मौलवियों सहित (कुछ ने इस अभियान का विरोध भी किया थी) लेकिन उनमें लेकिन बहुत सारे ऐसे थे जिन्होंने इस परियोजना को और इस प्रयास को सफल बनाया। इसलिए अख़बारों ने इस पर टिप्पणी भी की और समाचार भी प्रकाशित हुए।

एक अख़बार " मशरिक" गोरखपुर 21 जून 1928 ई में उसने लिखा कि भारत में यह इतिहास हमेशा जीवित रहेगा। क्योंकि इस तिथि में आला हज़रत आकाए दो जहान सरदार कौनीन सरदार कौनो व मकां मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िक्रे ख़ैर किसी न किसी रूप में मुसलमानों के हर फिर्का ने किया और हर शहर में यह कोशिश की गई कि अव्वल दर्जे पर हमारा शहर रहे। जिन दोस्तों ने इस मौके पर फूट और धमकी देकर उपद्रव के लिए पोस्टर लिखे।(कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने विरोध करना ही करना होता है) और भाषण लिखकर हमारे पास भेजे (अर्थात अख़बार के पास) वे बहुत मूर्ख हैं अख़बार लिखने वाला कहता है वे बहुत मूर्ख हैं जो हमारे विश्वास से परिचित नहीं। हमारा विश्वास है कि जो व्यक्ति ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह पर ईमान रखे वह नाजी है। आगे लिखता है कि बहरहाल 17 जून को जलसा की सफलता पर हम इमाम जमाअत अहमदिया आदरणीय मिर्ज़ा महमूद अहमद को बधाई देते हैं। अगर शिया व सुन्नी और अहमदी इसी तरह साल भर में दो चार बार एक जगह जमा हो जाया करेंगे तो कोई शक्ति इस्लाम का मुकाबला इस देश में नहीं कर सकती।

(तारीख़ अहमदियत भाग 5 पृष्ठ 36-37)

फिर एक अखबार 'सुल्तान' कलकत्ता से प्रकाशित होता है। यह बंगाली अख़बार है उसने 21 जून में लिखा कि जमाअत अहमदिया ने 17 जून को रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी का वर्णन करने के लिए भारत भर में जलसे आयोजित किए। हमें सूचना मिली है कि लगभग सभी जगह सफल जलसे हुए और यह एक तथ्य है कि इस इलाके में अहमदियों को ऐसी भव्य सफलता मिली है कि इससे पहले कभी नहीं हुई और इससे मालूम होता है कि जमाअत अहमदिया प्रतिदिन शक्तिशाली हो रही है और लोगों के दिलों में जगह मिल रही है हम ख़ुद भी इस शक्ति को स्वीकार करते हैं और उनकी सफलता की कामना है।

(तारीख़ अहमदियत भाग 5 पृष्ठ 37-38)

तो यह उस समय अख़बारों ने भी लिखा और ग़ैरों ने साथ भी दिया। इसलिए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। जमाअत अहमदिया किसी से प्रशंसा लेने की ज़रूरत नहीं यह कोशिश तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो ने इसलिए की थी कि इस्लाम दुश्मनों और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हंसी ठठा करने वालों को यह पता चले कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान क्या था और यह कि इस बात पर मुसलमान एक हैं। कादियान में कुछ हिंदुओं ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी पर भाषण दिए। अल्फज़ल ने विशेष रूप से उस समय ख़ातमन्नबिय्यीन नंबर प्रकाशित किया और उसके बाद से जमाअत अहमदिया नियमित सीरत नबी के जलसे आयोजित करती है। आप ने चार पाँच जो बिन्दु दिए थे उनमें यह भी था एक के बजाय केवल 12 रबीउल अव्वल को सारे साल में विभिन्न समयों में सीरत के जलसे होने चाहिए।

(तारीख़ अहमदियत भाग 5 पृष्ठ 31)

बहरहाल यह जमाअत अहमदिया का इतिहास है और जलसे आयोजित कर रहे हैं और अब तो अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया के दो सौ से अधिक देशों जहां जमाअत अहमदिया स्थापित हो चुकी है ये जलसे आयोजित किए जाते हैं और इंशा अल्लाह तआला अहमदी ही हैं और हमेशा रहेंगे जो मकाम ख़त्म नबुव्वत की सही समझ रखते हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उचित स्थान से दुनिया को परिचित करा रहे हैं। यह इसलिए कि हमें इस ज़माने के इमाम मसीह मौऊद और महदी मअहूद अलैहिस्सलाम ने बताया कि अगर ख़ुदा तआला तक पहुंचना है तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामन को पकड़ो कि आप ही अब मुक्ति की राह हैं और कोई साधन नहीं। आप अलैहिस्सलाम ने फरमाया।

"वह है मैं चीज़ क्या हूँ"

(कादियान के आर्या और हम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 456)

आप ने कभी भी अपने आप को बड़ा नहीं साबित किया। हमेशा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान ही वर्णन किया।

फिर इस आरोप को खारिज करते हुए कि हम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानते आप अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"यह भी याद रखना चाहिए कि मुझ पर और मेरी जमाअत पर जो आरोप लगाया जाता है कि हम अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानते यह हम पर महान झूठ है। हम जिस शक्ति, विश्वास अनुभूति और अंतर्दृष्टि के साथ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अंबिया मानते और विश्वास करते हैं उसका लाखवां हिस्सा भी दूसरे लोग नहीं मानते और उनका ऐसा सामर्थय ही नहीं है वह तथ्य और रहस्य को जो ख़ातमुल अंबिया की ख़त्म नबुव्वत में है, समझते ही नहीं। उन्होंने केवल बाप दादा से एक शब्द सुना हुआ है लेकिन इस तथ्य से अनजान हैं और नहीं जानते कि खत्म नबुव्वत क्या होता है और उस पर ईमान करने से अभिप्राय क्या है? मगर हम पूर्ण अंतर्दृष्टि से (जिसे अल्लाह तआला बेहतर जानता है) आँ हज़रत स अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अंबियाअ विश्वास करते हैं और ख़ुदा तआला ने हम पर ख़त्म नबुव्वत की सच्चाई को ऐसे रूप में खोला गया है कि इरफान के शर्बत जो हमें पिलाया गया है एक विशेष आनन्द पाते हैं जिसका अंदाज़ा कोई नहीं कर सकता सिवाय जो लोग इस चश्मे से तृप्त हों।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 342 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए जो हमें खत्म नबुव्वत का इनकार करने वाला समझते हैं वे खुद अंधे हैं और उनके दिल खोखले हैं सिवाय नारा लगाने और फत्ना तथा उपद्रव और तोड़फोड़ के उनके पास और है ही क्या। क्या इस्लाम का जो संदेश इस समय जमाअत अहमदिया दुनिया में फैला रही है वह इस बात की काफी दलील नहीं है कि हज़रत ख़ात्मुल अंबिया मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी उम्मत के लिए मांगी गई दुआओं से मसीह मौऊद की जमाअत ही हिस्सा ले रही है।

फिर खत्म नबुव्वत की सच्चाई बयान फरमाते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फरमाते हैं कि

"हमें अल्लाह तआला वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दिया जो ख़ात्मुल मोमनीन ख़ात्मुल आरफीन और ख़ातमन्नबिय्यीन है और इसी तरह वह किताब उस पर अवतरित की जो समस्त किताबों की व्यापक और ख़ात्मुल कुतब है। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो ख़ातमन्नबिय्यीन हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत समाप्त हो गई तो यह नबुव्वत इस तरह से खत्म नहीं हुई जैसे कोई गला घोंट कर समाप्त करे। ऐसा समाप्त गर्व नहीं होता बल्कि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत समाप्ति से यह अर्थ है कि भौतिक रूप में आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर नबुव्वत के कमाल खत्म हो गए अर्थात वे सभी विविध कमाल जो आदम से लेकर मसीह मरियम तक नबियों को दिए गए थे किसी को कोई और किसी को कोई वे सभी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में जमा कर दिए गए और उस पर आप अपने आप ख़ातमन्नबिय्यीन ठहरे और ऐसा ही वे समस्त शिक्षाएं,उपदेश और मआरिफ़ जो विभिन्न पुस्तकों में चले आते हैं वे कुराआन शरीफ पर आकर खत्म हो गई और कुराआन शरीफ ख़ात्मुल कुतब ठहरा।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 341-342 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और मकाम का वर्णन कहते हुए कि प्रत्येक युग के लिए ज़िन्दा रसूल केवल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"क्या इस्राईल के शेष यहूदी या हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को ख़ुदावन्द ख़ुदा पुकारने वाले ईसाइयों में कोई है जो उनके निशानों से मेरा मुकाबला करे। मैं पुकार कर कहता हूँ कि कोई नहीं एक भी नहीं। फिर यह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सामर्थ्य पूर्ण मोजज़ा दिखाने की शक्ति को दर्शाता है क्योंकि यह माना हुआ मसला है कि अनुकरण किए जाने वाले नबी मोजज़े ही वे मोजज़े कहलाते हैं जो किसी अनुकरण कारी के हाथ पर प्रकट हों। इसलिए जो निशान आदतों से हट कर मुझे दिए गए हैं जो पेशगोईयों का भव्य निशान मुझे दिया गिया है यह वास्तव में रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिन्दा मोज़ज़े (चमत्कार) हैं और किसी दूसरे नबी के अनुकरण कारी को यह आज गर्व नहीं है कि वह इस तरह से घोषणा कर प्रकट कर दे कि वह भी अपने अंदर ही अपने अनुकरण किए जाने वाली की कुव्वते कुदसी से आदत से हटकर निशान दिखा सकता है। यह गर्व केवल इस्लाम को है और इसी से मालूम होता है कि प्रत्येक युग के लिए जीवित रसूल केवल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही हो सकते हैं जिनके पवित्र बरकतों और

कुव्वते कुदसिया के कारण से हर ज़माने में एक ख़ुदा का बन्दा ख़ुदानुमाई का सबूत देता रहता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 413-414 प्रकाशन)

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और मकाम, आपकी विनय तथा विनम्रता और अल्लाह तआला तक पहुँचने के लिए आप की मुहब्बत में समर्पित होने के बारे में अल्लाह तआला के फरमान का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"हदीस में आया है कि अगर कृपा न होता तो मुक्ति न होती।" (यह अल्लाह तआला का फज़ल है जिसके कारण मुक्ति होती है।)" ऐसा ही हदीस से मालूम होता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने आप से सवाल किया (आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक बार पूछा) कि या हज़रत क्या आप का भी यही हाल है।"(यह जो आप ने फरमाया कि यदि अल्लाह तआला की कृपा न हो तो मुक्ति न होती तो आपका भी यही हाल है?) "आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिर पर हाथ रखा और फरमाया।"हाँ।" आप फरमाते हैं कि "यह आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की पूर्ण अबोदियत का प्रकट करना था जो ख़ुदा तआला की रबोबियत को अवशोषित कर रहा था।" फिर आप ब्यान फरमाते हैं कि "हम ने ख़ुद अनुभव कर देखा है और कई बार आज़माया है बल्कि हमेशा देखते हैं कि जब विनम्रता और विनय की हालत चरम को पहुंचती है और हमारी रूह इस अबोदियत और विनय में बह निकलती है और अत्यधिक देने वाले अल्लाह तआला के आस्ताना पर पहुंच जाती है तो एक रौशनी और नूर ऊपर से उतरता है और ऐसा लगता है जैसे एक नाली के माध्यम से शुद्ध पानी दूसरी नाली में पहुंचता है तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हालत जितना कुछ स्थानों पर विनम्रता और विनय की पूर्णता पर पहुंची हुई नज़र आती है वहाँ लगता है कि उतनी ही आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) रूहुल कुदुस के समर्थन और नूर से सहायता प्राप्त और प्रकाशित हैं जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने व्यावहारिक और कार्यात्मक स्थिति से दिखाया है। यहां तक कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के नूरूं और बरकतों का दायरा इतना व्यापक है कि प्रत्येक युग तक इसका नमूना और प्रतिरूप नज़र आता है। अत: इस ज़माना में भी जो ख़ुदा तआला का फ़ैज़ और फज़ल प्रकट हो रहा है वह आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का पालन करना और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के अनुकरण से मिलता है।" फरमाया "मैं सच कहता हूँ कोई व्यक्ति वास्तविक नेकी करने वाला और ख़ुदा तआला की ख़ुशी को पाने वाला नहीं ठहर सकता और इन पुरस्कारों और बरकतों और मआरिफ़ और तथ्यों और कशफों से लाभांवित नहीं हो सकता जो उच्च स्तर की आत्म शुद्धि पर मिलते हैं जब तक कि वह रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण में खोया न जाए और इस का सबूत खुद ख़ुदा तआला के कलाम से मिलता है।(अल्लाह तआला फरमाता है कुरआन शरीफ में फरमाता है कि)

قُلۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِىۡ يُحۡبِبۡكُمُ اللّٰهُ

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 203-204 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

यदि अल्लाह तआला की मुहब्बत चाहते हो तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहलवाया कि आप का अनुसरण करो तो अल्लाह तआला की मुहब्बत मिलेगी।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और कुरआन नाज़िल करने का उद्देश्य बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद फरमाते हैं कि

"मैंने कई बार इस से पहले भी वर्णन किया है और अब भी यह वर्णन करना लाभ से खाली नहीं है इसलिए मैं फिर कहना चाहता हूँ कि अल्लाह तआला जो नबियों को भेजता है और आख़िर में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उसने दुनिया के निर्देश के लिए भेजा और कुरआन को उतारा तो उसका उद्देश्य क्या था? प्रत्येक व्यक्ति जो काम करता है उस का कोई न कोई उद्देश्य होता है ऐसा समझना कि कुरआन शरीफ उतारने या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भेजने के भेजने से अल्लाह तआला की कोई ग़रज़ और उद्देश्य नहीं है बहुत बड़ी गुस्ताख़ी और बेअदबी है क्योंकि इस में (मुआज़ अल्लाह) अल्लाह तआला की तरफ एक व्यर्थ कार्य को सम्बंधित किया जाएगा है। (फिर अल्लाह तआला की ओर सम्बंधित करना फ़िज़ूल बात होगी) हालांकि उसकी हस्ती पवित्र है। अत: याद रखो कि कुरआन मजीद के भेजने और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत से अल्लाह तआला ने चाहा है कि ताकि दुनिया में महान रहमत का नमूना दिखाए जैसे फरमाया। وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ (अल् अंबिया 108) और ऐसा ही कुरआन भेजने का उद्देश्य बताया कि هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ (अल्बकर: 3)यह ऐसे महान उद्देश्य हैं कि उनकी मिसाल नहीं पाई जा सकती।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 340 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर कुरआन की ऊंची शान होने और इस बात की व्याख्या फरमाते हुए कि कुरआन में विविध पुस्तकों के सभी कमाल जमा हैं और केवल बतौर किस्सा के नहीं बल्कि एक मोमिन के लिए पालन करने के लिए कर रहे हैं आप फरमाते हैं

"अल्लाह तआला ने चाहा है कि जैसे सभी विविध कमाल जो नबियों में थे वह रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्तित्व में जमा कर दिए। इसी प्रकार से सभी खूबियां और कमाल जो विविध किताबों में थे वे कुरआन शरीफ में कर दिए और ऐसा ही जितने कमाल सभी उम्मतों में थे इस उम्मत में जमा कर दिए। अत: ख़ुदा तआला चाहता है कि हम इन कमालों को पा लें और यह बात भी भूलनी नहीं चाहिए कि जैसे वह भव्य कमाल हम को देना चाहता है उसी के अनुसार उस ने हमें शक्तियां भी प्रदान की हैं क्योंकि अगर इसके अनुसार शक्तियां न दी जाती तो फिर हम इन कमालों को किसी रूप में और स्थिति में पा ही नहीं सकते थे। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई व्यक्ति एक समूह की दावत करे तो ज़रूर है कि इस गिरोह की संख्या के अनुसार भोजन तैयार करे और इसी के अनुसार एक मकान यानी दावत की जगह भी हो। यह कभी नहीं हो सकता कि दावत तो एक हज़ार आदमी की करे और उनके बिठाने के लिये एक छोटी सी झोपड़ी बना दे" (निमंत्रण करे हज़ार आदमी की और जगह बिल्कुल थोड़ी सी रखे।" नहीं बल्कि वह इस संख्या का पूरा ध्यान रखेगा। इसी तरह से ख़ुदा तआला की किताब भी एक दावत और भोज है। (क़ुरआन करीम एक दावत और भोज है) जिसके लिए कुल दुनिया को बुलाया गया है(यह दावत यह शरीयत (व्यवस्था) सारे संसार के लिए है। इस दावत के लिए ख़ुदा तआला ने जो मकान तैयार किया है वह मानव शक्तियां हैं" (इंसान में जो शक्तियां हैं वे बैठने के लिए मकान है। इसलिए हर इंसान का यह कहना कि हम कुरआन के अमुक आदेश का पालन नहीं कर सकते। यह बड़ा कठिन है। यह ग़लत है। अल्लाह तआला ने इंसानों को वे शक्तियां दी हैं कि उन पर अमल हो सके। फिर आप फरमाते हैं कि) "जो उन लोगों को दिए गए हैं जो इस उम्मत में हैं।" मुसलमानों में इन वास्तविक मुसलमानों में जो शुद्ध होकर अपने विश्वास पर कायम हैं उन्हें यह शक्तियां दी गई हैं।) फिर फरमाया कि "शक्तियों के बिना कोई काम नहीं हो सकता।" आप फरमाते हैं कि "अब अगर बैल कुत्ते या किसी और जानवर के सामने कुरआन की शिक्षाओं को पेश करें तो वह नहीं समझ सकते क्योंकि उनमें शक्तियां नहीं हैं जो वे कुरआन की शिक्षाओं को सहन कर सकें लेकिन अल्लाह तआला ने हमें वह शक्तियां दी हैं कि हम उन से लाभ उठा सकते हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 340-341 प्रकाशन यू.के)

इसलिए अगर इंसान अपने आप को यह कह जानवर न समझे कि हमें शक्तियां नहीं हमें ताकतें नहीं, कुरआन का पालन कर सकें अल्लाह तआला एक सच्चे मुसलमान को वे शक्तियां दी हैं और उन्हें फिर निखार मनुष्य का काम है ताकि कुरआन की आज्ञाओं पर अमल करे।

मुसलमानों के व्यवहार क्या हैं? और आप कैसे इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान रखते हुए नसीहत फ़रमाते हैं इस बात का वर्णन कहते हुए कि इस युग में सबसे बड़ी इबादत क्या है? फरमाया कि

" एक मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि इस ज़माना के बीच जो इस्लाम पर फित्ना पड़ा हुआ है उसे दूर करने में कुछ हिस्सा ले। बड़ी इबादत यही है कि इस फ़ित्ने के दौर में प्रत्येक मुसलमान कुछ भाग ले। इस समय जो बुराइयां और गुस्ताख़ियाँ फैली हुई हैं चाहिए कि अपने भाषण और ज्ञान के द्वारा और प्रत्येक बल के साथ जो उसे दी गई है। ईमानदारी से कोशिश के साथ इन बातों को दुनिया से उठाए। अगर इसी दुनिया में किसी को आराम और सुख मिल गयाई तो क्या फायदा। अगर दुनिया में भी स्थिति पा ली तो क्या मिलता है। परलोक का इनाम लो जिसकी सीमा नहीं। प्रत्येक मुसलमान को ख़ुदा तआला की तौहीद के लिए ऐसा जोश होना चाहिए जैसा कि ख़ुदा तआला को अपनी तौहीद का उत्साह है। विचार करो कि दुनिया में इस तरह का पीड़ित कहाँ मिलेगा जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। कोई गंद और गाली और बुरी बात नहीं जो आपकी तरफ न फेंकी गई हो। क्या यह समय है कि मुसलमान चुप होकर बैठे रहें। अगर इस समय कोई व्यक्ति खड़ा नहीं होता और सच्चाई के लिए गवाही देकर झूठे का मुंह बंद नहीं करता और वैध रखता है कि काफिर लोग अभद्रता से हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आरोप लगाते जाएं और लोगों को गुमराह करते जाएं तो याद रखो वे वास्तव में

बड़ी पूछताछ के नीचे है। चाहिए कि जो कुछ ज्ञान और परिचिय प्राप्त है वह इस राह में खर्च करो। (तुम्हारा अपना जितना धर्म का ज्ञान है इस मार्ग पर खर्च करो) "और लोगों को इस मुसीबत से बचाओ। हदीस शरीफ से साबित है कि यदि तुम दज्जाल को न मारो तब भी वह तो मर ही जाएगा। कहावत प्रसिद्ध है। "हर कमाले रा ज़वाल।" तेरहवीं सदी से यह आफ़्तें शुरू हुईं और अब समय आ रहा है कि उसका अंत हो जाए इसलिए प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है कि जहां तक हो सके पूरी कोशिश करे। नूर और रौशनी लोगों को दिखाए

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 394-395 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

और इस नूर और रोशनी को दिखाने के लिए और फैलान के लिए जैसा कि पहले भी मैंने कहा अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा और हम भाग्यशाली हैं कि हम आप की बैअत में आए हैं अब इस मिशन को आगे चलाना भी हमारा काम है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बराहीन अहमदिया में अपने एक इल्हाम का उल्लेख करते हुए फरमाते हैं।

" जो इल्हाम है वह यह है कि सल्ले अला मुहम्मदिन व आले मुहम्मदिन सय्यद इब्ने आदम ख़ातमुल नबिय्यीन और दरूद भेज मुहम्मद और आले मुहम्मद पर जो सरदार है आदिम के बेटों का और ख़ात्मुल अंबिया है सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।" आप फरमाते हैं कि "यह इस बात का संकेत है ये सब सम्मान और उपकार और इनाम उसी के द्वारा हैं और उसी से प्यार का ये बदला हैं। सुबहान अल्लाह उस सर्वर कायनात के हज़रत अहदयत में क्या ही क्या उच्च सम्मान हैं और किस प्रकार का सानिध्य है कि उसका प्यारा ख़ुदा का प्रिय बन जाता है और उसका सेवक एक दुनिया का मख़दूम बन जाता है।

हैच महमूब नमानद हमचू यार दिलबरम
मुहर व मह रा नीस्त दर दयार दिलबरम
आं कजा रोए कि दारद हमचू रोश आबो हयात
वां कुजा बाग़े कि मे दारद बहारे दिलबरम

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 597-598 हाशिया)

कि मेरे महबूब जैसा कोई नहीं है उसके यहां चाँद और सूरज का भी कोई मूल्य नहीं है। ऐसा चेहरा कहां कि जैसी चमक रखता हो और ऐसा उद्यान कहां जो मेरे महबूब जैसी बहार रखता हो।

इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि दरूद किस उद्देश्य से पढ़ना चाहिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

"दरूद शरीफ इस उद्देश्य से पढ़ना चाहिए ताकि ख़ुदा तआला अपनी पूर्ण बरकतें अपने नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल करे और उसे सारे संसारों के लिए बरकतों का स्रोत बना दे और उसकी महिमा और वैभव इस संसार और उस संसार में प्रकट करे। यह दुआ दिल की गहराई से होनी चाहिए जैसा कि संकट के समय दिल की गहराई से दुआ करता है।" (इसी तरह दरूद शरीफ पढ़ते हुए दुआ होनी चाहिए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान के लिए दुआ होनी चाहिए। जिस तरह अपनी किसी मुश्किल में फंस कर इंसान दुआ करता है बल्कि इससे भी अधिक ध्यान और करूणा से की जाए और कुछ अपना हिस्सा नहीं रखना चाहिए। (फरमाया कि इससे कुछ हिस्सा अपना नहीं रखना चाहिए) कि इससे मुझे इस पुरस्कार प्राप्त होगा या यह स्थिति मिलेगी बल्कि शुद्ध यही गंतव्य होना चाहिए कि अल्लाह तआला की पूर्ण बरकतें हज़रत रसूल मकबूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल हों और उसकी महिमा दुनिया और आख़िरत में चमके।"

(मक्तूबात अहमद भाग 1 पृष्ठ 523 प्रकाशन 2008 ई)

अत: दुश्मन हमें जो चाहे कहता रहे। हम पर जो भी आरोप लगाते हैं लगाते रहें हमारे दिलों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत है और हमें सब से बढ़कर आप के ख़ातमन्नबिय्यीन होने का एहसास है और यह सब हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दिया है। अल्लाह तआला करे कि हम दुश्मन के हर हमले और हर अत्याचार के बाद पहले से बढ़कर अपने विश्वास में बढ़ते चले जाने वाले हों और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद पहले से बढ़कर भेजने वाले हों ताकि मुसलमानों को भी आप के इस स्थान का सही समझ प्राप्त हो और भटके हुए मुसलमान भी सही रास्ते पर आ जाएं और दुनिया में इस्लाम की सुंदर शिक्षा फैले।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हुलिया मुबारक (मुखाकृति)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मर्दाना सुन्दरता का उत्तम नमूना थे । शरीर न अधिक दुबला था न मोटा था। क़द मध्यम था। कन्धे तथा छाती विस्तृत। रंग सफ़ेदी लिए हुए गेहूँआ था। मुख पर सदा एक विशेष प्रकार के नूर, आनंद, और चमक की झलक रहती थी। सिर के बाल बहुत बारीक सीधे तथा चमकदार थे। दाढी घनी पर बहुत सुन्दर थी। आँखें कालापन लिए शर्बती रंग की थीं। और सदा नीचे की ओर झुकी रहतीं। पेशानी (माथा) सीधी, ऊँची और चौड़ी थी। और उससे अत्यन्त प्रतिभा और प्रवीणता टपकती थी। पहरावा बहुत सादा होता था। अर्थात् कुर्ता या कमीज़, पाजामा, सदरी, कोट और पगड़ी होता था। पाँव में देसी जूती पहनते थे। बाहर जाते समय हाथ में असा (सोटी) अवश्य रखते थे। खाना बहुत सादा था। और खाना बहुत कम और धीरे-धीरे खाते थे ।

हुज़ूर की आदतें तथा सद्व्यवहार

हुज़ूर की आदतों तथा व्यवहार में निम्न बातें विशेष रूप से दिखाई देती थीं ।

1. हुज़ूर को अल्लाह तआला की हस्ती (अस्तित्व) पर तथा अपने दावे की सच्चाई पर पूरा विश्वास था। तथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के साथ अत्यन्त प्रेम रखते थे।

2. ईश्वर भक्ति में हर समय लीन रहते थे। देखने में जब आप सांसारिक काम भी करते तो धीरे धीरे अल्लाह तआला की तसबीह (याद) करते रहते। वास्तव में आप का सारा जीवन ही साक्षात ईश्वर भक्ति था।

3. तक़वा (संयम) सच्चाई और क़ुर्आन करीम के आदेशों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के उपदेशों पर चलने कर सदा विशेष ध्यान रखते थे।

4. जीवन बहुत ही सादा और हर प्रकार के दिखावे से पाक था।

5. कठिन से कठिन हालातों का भी सब्र (धैर्य) दृढता और वीरता के साथ मुक़ाबला करते थे।

6. परिश्रम करने की विशेष आदत थी। ख़ुदा तआला ने जो काम हुज़ूर को सौंपा था, दिन रात उसी में व्यस्त रहते थे।

7. पत्नी, बच्चों और मित्रों के साथ, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं से भी बड़े ही प्रेम, नम्रता, और सहानुभूति का व्यवहार करते थे। और सदा उन के मन के भावों का ध्यान रखते थे। परन्तु साथ ही उनकी शिक्षा-दीक्षा का भी विशेष ध्यान रखते थे।

8. अतिथि सेवा भी आपका विशेष गुण था। अतिथियां के आराम का बहुत ही ध्यान रखते थे।

हज़रत ड़ाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ने हुज़ूर की आदतों और सद्व्यवहार का संक्षेप में बड़े ही सुन्दर परन्तु व्यापक रूप में वर्णन किया है। आप लिखते हैं :-

''हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने सद्व्यवहार में कामिल (दक्ष) थे। अर्थात् आप अति नम्र और दयालू थे। दानवीर थे। अतिथि पूजक थे। ...विपत्तियों के समय जब लोगों के दिल बैठे जाते थे आप शेर के समान आगे बढते थे। क्षमा, वदान्यता, अमानतदारी विनीत, सब्र व शुक्र, निस्पृहता, लज्जा, परिश्रम, संतोष, वफ़ादारी, सादगी, कृपा, अदबे इलाही (ख़ुदा का सम्मान) अदबे रसूल व बुज़ुर्गाने दीन (रसूल तथा धर्मात्माओं का सम्मान) शीलता, ज़िम्मेदारियों को पूरा करना, वचन पूरा करना, चुस्ती, सहानुभूति, गंभीरता, पवित्रता, विनोद और परिहास, हिम्मत उत्साहशीलता, स्वाभिमान, ख़ुदा और उसके रसूल का इश्क़ (प्रेम) रसूल का पूर्ण अनुसरण, यह संक्षिप्त आपके अख़लाक़ और आदात थे। मैं ने आपको उस समय देखा जब मैं दो वर्ष का बालक था। फिर आप मेरी आँखों से उस समय लुप्त हुए जब मैं सत्ताईस वर्ष का जवान था। पर मैं ख़ुदा की कसम (शपथ) खा कर ब्यान करता हूँ कि मैं ने आप से अधिक ख़लीक़ (शिष्ट) आपसे अधिक नेक, आप से अधिक बुज़ुर्ग, आप से अधिक अल्लाह और उसके रसूल के प्रेम में लीन कोई व्यक्ति नहीं देखा। आप एक नूर थे जो मानव जाति के लिए संसार में प्रकट हुआ।"

(उद्धरित जमाअत अहमदिया की संक्षिप्त तारीख़)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

जमाअत अहमदिया का विरोध और जमाअत के व्यक्तियों पर जमाअत विरोधियों की तरफ से किए जाने वाला अत्याचार कोई नई बात नहीं है और न ही नबियों की जमाअतों का विरोध कोई नई बात है। सब शैतान इकट्ठे होकर ये विरोध करते हैं। उलेमा और लीडर साधारण जनता के सामने अजीबो गरीब प्रकार की बातें नबियों और उनके मानने वालों की तरफ सम्बन्धित कर के वर्णन करते हैं उन्हें भड़काते हैं। नफरतों की आगें सुलगाने की कोशिश करते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि अब हम अहमदियों पर अत्याचार की चरम हो गई है और अब हमें सख्ती का जवाब सख्ती से देना चाहिए। कितना समय हम कष्ट सहन करेंगे। कुछ ऐसे युवाओं के मन को ज़हर प्रभावित करने की कोशिश करते हैं ये भी कहते हैं कि हमें अपनी मांगे मनवाने के लिए और अपनी स्वतंत्रता के लिए सांसारिक तरीके अपनाने चाहिए। यह अज्ञानता की बातें हैं और बेहद ग़लत सोच है।

लेकिन अगर कोई एकाध व्यक्ति भी ऐसी बात करे जो जमाअत की शिक्षा के ख़िलाफ है जो फित्ना पैदा करने वाली बात है और दुश्मन को अपने ख़िलाफ अधिक विरोध का मौका देना है, खासकर जब कि ऐसी बातें वाट्स अपस एप्लिकेशन पर या ट्विटर पर या फेसबुक पर या किसी अन्य माध्यमों से की जाएं।

इसलिए हम ने तो इस शिक्षा का पालन करना है और इस नुस्ख़ा पर चलना है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दिया है। हम ने गालियों का जवाब न गाली से देना है, न फसाद का जवाब फसाद पैदा कर के देना है और कानून को अपने हाथ में ले कर देना है। देश में शरारत करना हमारी शिक्षा नहीं है। इसलिए एक ही रास्ता है कि अल्लाह तआला के दरवाज़े को पकड़ें और दुआओं की चरम कर दें।

हम में से हर एक को अपना आकलन करना चाहिए कि क्या मैंने दुआ की वे गुणवत्ता प्राप्त कर लिए हैं जो अल्लाह तआला हम से चाहता है क्या हम सांसारिक पर माध्यम नज़र रखने के बजाय अपनी रूह को पिघलाने के उस मानक पर ले गए हैं जहां दुआ की स्वीकृति होती है। हमारा काम धैर्य और दुआ के साथ अल्लाह तआला के दामन को पकड़े रखना है। अगर कोई भी हम में से बेसब्री दिखाएगा तो अपना नुकसान करेगा।

दूसरे मुसलमान जो बिना लीडर के हैं और इसलिए उन में बिगाड़ पैदा हो रहा है और तक्वा से दूरी हो रही है लेकिन हम जो अहमदी मुसलमान हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने एक लीडर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रूप में प्रदान फरमाया है हमारा हर कर्म इस्लामी शिक्षा के अनुसार होना चाहिए और हमारी हर बात तक्वा पर आधारित होनी चाहिए। अस्थायी और क्षणिक जोशों से हमें हमेशा बचना चाहिए।

विपरीत परिस्थितियों में यदि हम ज़माने के इमाम की बताई हुई नसीहतों और निर्देशों का पालन नहीं कर रहे तो हम इस नूर से दूर चले जाएंगे जो अल्लाह तआला से इस आज्ञाकारिता के कारण हमें मिलना है। इसलिए हमें पहले अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है अगर हमारे तक्वा की गुणवत्ता इतने बुलंद हो चुके हैं कि जहां हमें अल्लाह तआला का नूर दिखाई दे तो फिर हमें इस बात पर यकीन होना चाहिए कि अल्लाह तआला की मदद और सहायता करीब है।

यह परीक्षाओं का दौर वास्तव में खत्म होने वाला दौर है लेकिन इसमें तेज़ी लाने के लिए हमें अपने तक्वा के मानकों को बढ़ाने और बढ़ाते चले जाने की जरूरत है।

आदरणीय मलिक ख़ालिद जावेद साहिब दोलमियाल की वफात, मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 23 दिसम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

जमाअत अहमदिया का विरोध और जमाअत के व्यक्तियों पर जमाअत विरोधियों की तरफ से किए जाने वाला अत्याचार कोई नई बात नहीं है और न ही नबियों की जमाअतों का विरोध कोई नई बात है। सब शैतान इकट्ठे होकर ये विरोध करते हैं। उलेमा और लीडर साधारण जनता के सामने अजीबो गरीब प्रकार की बातें नबियों और उनके मानने वालों की तरफ सम्बन्धित कर के वर्णन करते हैं उन्हें भड़काते हैं। नफरतों की आगें सुलगाने की कोशिश करते हैं। अल्लाह तआला ने कुरआन में यह बयान करके स्पष्ट फरमा दिया कि हर नबी का विरोध होता है। कोई नबी नहीं जिसका विरोध न हुआ हो। नबियों से मज़ाक भी किया जाता है उनके कार्यों में रोकें डालने की शैतान कोशिश भी करता है। तो यह कोई नई बात नहीं जिस का जमाअत अहमदिया को सामना है। अल्लाह तआला कुरआन में इस बात का वर्णन कहते हुए एक जगह फरमाता है कि وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَ الْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا (सूरह: अनआम: 113)और हम ने मनुष्यों और जिन्नों में से सरकशों को इस तरह हर एक नबी का दुश्मन बना दिया था। उनमें से कुछ कुछ को लिपटी हुई बातें धोखा देते हुए वह्यी करते हैं। अर्थात धोखे देने वाले विचार लोगों के दिलों में डालते हैं।

अल्लाह तआला की यह बात आज भी सच है कि विद्रोही उलमा धर्म के नाम पर धोखा देते हैं और धोखा देते हुए साधारण जनता को भड़काते हैं और विभिन्न स्थानों पर कुछ लीडर भी उनके साथ मिले हुए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत की ओर ऐसी बातें सम्बन्धित की जाती हैं जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं, सच्चाई से कोई वास्ता ही नहीं। इसी तरह दूसरी बातें भी ये लोग जो जमाअत के बारे में करते हैं या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मजाक करते हैं ये सब बातें अल्लाह तआला ने कुरआन में वर्णन की हैं कि नबियों के साथ ऐसा ही होता है। झूठ भी उन पर बोला जाता है। उनका उपहास भी किया जाता है मज़ाक भी उड़ाया जाता है। अत: यह हमारा विरोध और हमें पीड़ा देना एक वास्तविक सच्चे, ईमान पर कायम अहमदी के ईमान में अधिकता का कारण बनता है लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि अब हम अहमदियों पर अत्याचार की चरम हो गई है और अब हमें सख्ती का जवाब सख्ती से देना चाहिए। कितना समय हम कष्ट सहन करेंगे।

यह चाहे एक दो या कुछ हों लेकिन कुछ ऐसे युवाओं के मन को ज़हर प्रभावित करने की कोशिश करते हैं ये भी कहते हैं कि हमें अपनी मांगे मनवाने के लिए और अपनी स्वतंत्रता के लिए सांसारिक तरीके अपनाने चाहिए। यह अज्ञानता की बातें हैं और बेहद ग़लत सोच है। या तो ऐसे लोग भावनाओं में आकर यह भूल गए हैं कि हमारी बुनियादी शिक्षा क्या है। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से क्या चाहते हैं। आप ने अपनी जमाअत को इन कठिनाइयों और कष्टों को सहन करने के लिए क्या नसीहतें फरमाई हैं या तो हमदर्द बनकर ऐसे लोग जमाअत में फूट पैदा करना चाहते हैं जैसे जैसे जमाअत बढ़ती है विरोधी विभिन्न माध्यमों से हमले करते हैं। अलग तरीके आज़माए जाते हैं। हो सकता है यह भी एक तरीका है।

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीत व समर्थन और तरक्की के वादे किए हैं लेकिन सख्ती का जवाब सख्ती से देने से नहीं बल्कि मुहब्बत और प्यार और दुआओं की ओर ध्यान करने से और यही बात आप अलैहिस्सलाम ने हमें बार बार समझाई है कि जमाअत की तरक्की और दुश्मन का विनाश दुआओं से होना है। इंशा अल्लाह तआला। इसलिए अपनी स्थितियों को अल्लाह तआला की शिक्षा के अनुसार ढालते हुए अपने अंदर तक्वा पैदा करते हुए अल्लाह तआला के आगे झुको। मसीह मौऊद ने तो शांति का राजकुमार बनकर आना था और आया। आप ने तो अपने मानने वालों को पहले दिन से ही कह दिया था कि मेरे रास्ते आसान रास्ते नहीं हैं उनमें बड़ी सख़्तियां हैं यहाँ भावनाओं को भी मारना होगा और जानी व आर्थिक नुकसान भी सहन करना होगा। अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत के लोग इस मार्ग पर सभी प्रकार की पेशकश करते चले जा रहे हैं और जैसा कि मैंने पिछले ख़ुतबा में उल्लेख किया था कि मुझे लिखते हैं कि दुश्मन के हमलों से हम डरते नहीं हमारे ईमान पहले से मज़बूत हो रहे हैं लेकिन अगर कोई एकाध व्यक्ति भी ऐसी बात करे जो जमाअत की शिक्षा के ख़िलाफ है तो फित्ना पैदा करने वाली बात है और दुश्मन को अपने ख़िलाफ अधिक विरोध का मौका देना है, खासकर जब कि ऐसी बातें वाट्स अपस एप्लिकेशन पर या ट्विटर पर या फेसबुक पर या किसी अन्य माध्यमों से की जाएं। इसलिए हम तो इस शिक्षा को मानते आए हैं कि विरोधियों के अत्याचार और बर्बरता के मुकाबला में हम ने अत्याचार और बर्बरता नहीं दिखानी। वैसी प्रतिक्रिया हम ने नहीं करनी और न ही सरकारों से हम ने हथियारों से मुकाबला करना है। हमारा मुकाबला दुआओं के हथियार से है जैसा कि मैंने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें यह शिक्षा दी है कि अगर ख़ुदा तआला की मदद और उसके प्यार को पाना है तो दुश्मन के हमलों और ज्यादतियों का जवाब इस तरह नहीं देना बल्कि धैर्य और दुआ से काम लेना है तभी हम उपलब्धियां देखेंगे। अत: एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बताता है। पहले आपने एक फारसी का शेर फरमाया कि

अज़ीज़ाँ बे ख़ुलूस व सिदक न कशीनद राहे रा
मुसफ्फा कतरा बायद कि गौहर शवद पैदा

कि हे प्रियो बिना श्रृद्धा और ईमानदारी के स्थान प्राप्त नहीं होता। स्वच्छ और पारदर्शी कतरा बनो वही है स्वच्छ और पारदर्शी कतरा है जिससे गौहर और मोती पैदा होता है।

आप फरमाते हैं कि "हे मेरे दोस्तो! जो मेरे बैअत के सिलसिला में दाख़िल हो ख़ुदा हमें और तुम्हें उन बातों की तौफ़ीक़ दे जिनसे वह प्रसन्न हो आज तुम थोड़े हो और अपमान की नज़र से देखे गए हो और एक परीक्षा का समय तुम पर है इसी सुन्नत अल्लाह के अनुसार जो कि सनातन से जारी है। प्रत्येक और से कोशिश होगी कि तुम ठोकर खाओ और तुम हर तरह से सताए जाओगे और तरह तरह की बातें तुम्हें सुननी पड़ेंगी और प्रत्येक जो तुम्हें ज़बान या हाथ से दु:ख देगा वह विचार करेगा कि इस्लाम का समर्थन कर रहा है।"

अक्सर हमारे विरोधी साधारण जनता जो हैं कम ज्ञान की वजह से विरोध करते हैं मौलवियों ने उनके दिमाग़ों में डाल दिया है कि जो अहमदियों का जो विरोध है यह इस्लाम की बहुत बड़ी सेवा है।

आपने फरमाया ये लोग समझते हैं कि इस्लाम का समर्थन कर रहे हैं फरमाते हैं कि "और कुछ आसमानी परीक्षाएं भी तुम पर आएंगे ताकि तुम हर तरह से आज़माए जाओ। अत: तुम इस समय सुन रखो कि तुम्हारी विजय और ताकतवर हो जाने की यह राह नहीं कि तुम अपने सूखे तर्क से काम लो या उपहास के मुकाबला में उपहास की बात करो या गाली के मुकाबला में गाली से काम लो क्योंकि अगर तुम ने यही मार्ग धारण किए तो तुम्हारे मन कठोर हो जाएंगे और तुम में केवल बातें ही बातें होंगी जिनसे ख़ुदा तआला नफरत करता है और घृणा की नज़र से देखता है तो तुम ऐसा न करो कि अपने ऊपर दो लाअनतें जमा कर लो एक सृष्टि की और दूसरी ख़ुदा की भी।"

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 546-547)

इसलिए हम ने तो इस शिक्षा का पालन करना है और इस नुस्ख़ा पर चलना है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दिया है। हम ने गालियों का जवाब न गाली से देना है, न फसाद का जवाब फसाद पैदा कर के देना है और कानून को अपने हाथ में ले कर देना है और फिर पाकिस्तान और मुस्लिम देशों में तो अगर वैध रूप में भी अपना बचाव किया तो अक्सर यही देखा गया है कि कानून बजाय हमारा साथ देने के ज़ालिम का साथ देता है। मज़लूम अहमदी कैदियों की गारंटी भी इसलिए नहीं ली जाती कि अदालतें मौलवी के सामने बेबस हैं। अदालत के बाहर खड़ा मौलवी अदालत को संदेश भेज देता है कि अगर गारंटी ली तो तुम अपना हाल देख लेना और फिर अक्सर न्यायाधीश डर कर अगली तारीखें दे देते हैं और फैसले नहीं करते। इसलिए न कानून का पालन करने वाले हमारा साथ देने को तैयार हैं न कानून न्याय करने को तैयार है। देश में फसाद करना हमारी शिक्षा नहीं है। इसलिए एक ही रास्ता है कि अल्लाह तआला के दरवाज़े को पकड़ें और दुआओं की चरम कर दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"दुआओं और उसकी स्वीकृति के समय के बीच समय में कभी-कभी परीक्षाओं पर परीक्षाएं आती हैं और ऐसी ऐसी परीक्षाएं भी आ जाती हैं जो कमर तोड़ देती हैं मगर स्थाई नेक फितरत इन परीक्षाओं और कठिनाइयों में भी अपने रब्ब के पुरस्कारों की ख़ुशबू सूंघता है और कुशाग्र दृष्टि से देखता है कि उसके बाद सहायता आती है। इन परीक्षाओं के आने में एक भेद यह भी होता है कि दुआ के लिए जोश बढ़ता है क्योंकि जितनी जितनी व्याकुलता और चिन्ता बढ़ती जाएगी उतनी ही रूह में नरमी होती जाएगी और यह दुआ की स्वीकृति के कारणों में से हैं।" इतना ही इंसान का दिल पिघलेगा रोएगा चिल्लाएगा और जब यह स्थिति हो तो यह अल्लाह तआला ख़ुदा दुआ की स्वीकृति के लिए ही कारण पैदा कर रहा है। इसलिए फरमाया "अत: कभी घबराना नहीं चाहिए और अधीरता और व्याकुलता से अपने अल्लाह तआला पर शंकित नहीं होना चाहिए।

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 434-435 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: यह है हमारा कर्त्तव्य। बेशक अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किए गए वादे सच्चे हैं और वास्तव में अल्लाह तआला दुआ भी सुनता है। हम में से हर एक को अपना आकलन करना चाहिए कि क्या मैंने दुआ की वे गुणवत्ता प्राप्त कर लिए हैं जो अल्लाह तआला हम से चाहता है क्या हम सांसारिक माध्यम पर नज़र रखने के बजाय अपनी रूह को पिघलाने के उस मानक पर ले गए हैं जहां दुआ की स्वीकृति होती है। इन मानकों को केवल अल्लाह तआला जानता है। हम कोशिश भी करें तो जान नहीं सकते इसलिए कोई कह नहीं सकता कि हां हम ने यह गुणवत्ता प्राप्त कर लिए हैं फिर भी कुछ नहीं हुआ, दुआ स्वीकार नहीं हुई क्योंकि गुणवत्ता अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

हमारा काम धैर्य और दुआ के साथ अल्लाह तआला के दामन को पकड़े रखना है। अगर कोई भी हम में से बेसब्री दिखाएगा तो अपना नुकसान करेगा। जिन देशों में जो संकट में हैं विशेष रूप से पाकिस्तान में उनमें से अधिकांश तो धैर्य ही कर रहे हैं और दुआ भी कर रहे हैं और ईमान भी मज़बूत हैं और जो दूर बैठे हैं और बाहरी तकलीफों से बचे हुए हैं वही अधिकतर बातें भी करते हैं। अत: उन्हें भी चाहिए कि अगर अपने भाइयों से सहानुभूति है तो अल्लाह तआला का दामन पकड़ें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाया कि

"अगर कोई गालियां दे तो हमारा शिकवा ख़ुदा की जनाब में है न कि किसी और अदालत में और इस के अतिरिक्त जाति की सहानुभूति हमारा अधिकार है।

(सिराजे मुनीर रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 28)

गालियां सुन कर भी हम ने सहानुभूति ही करनी है। तो हम में से हर एक को चाहिए कि वह सीधे संकट के दौर से गुज़र रहा है या नहीं गुज़र रहा धैर्य और दुआ के दामन को पकड़ना है और यही ईमान की निशानी है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात का वर्णन कहते हुए कि आप के साथ चलना कोई आसान बात नहीं है फरमाते हैं

"अत: अगर कोई मेरे कदम पर चलना नहीं चाहता तो वह मुझ से अलग हो जाए। मुझे क्या मालूम है कि अब कौन से भयानक जंगल और कांटों वाले रास्ते सामने हैं जिन्हें मैंने तय करना है तो जिन लोगों के नाज़ुक पैर हैं वे क्यों मेरे साथ मुसीबत उठाते हैं। जो मेरे हैं वह मुझसे अलग नहीं हो सकते न मुसीबत से न लोगों की गाली गलौच से न आसमानी परीक्षाओं और इम्तेहानों से और जो मेरे नहीं वे व्यर्थ दोस्ती का दम मारते हैं क्योंकि वे जल्द ही अलग किए जाएंगे और उनकी पिछली हालत उनकी पहली से बदतर हो जाएगी। क्या हम भूकंप से डर सकते हैं? क्या हम ख़ुदा तआला के मार्ग में परीक्षाओं से भयानक हो जाएंगे? क्या हम अपने प्यारे ख़ुदा की किसी परीक्षा से अलग हो सकते हैं? कभी नहीं हो सकता मगर मात्र उनकी कृपा और रहम से। इसलिए जो अलग होने वाले हैं जुदा हो जाएं उन्हें विदाई का सलाम। लेकिन याद रखें कि शंकित और सम्बन्ध विच्छेद के बाद अगर फिर किसी समय झुकें तो इस झुकने का अल्लाह तआला के निकट ऐसा सम्मान नहीं होगा जो वफादार लोग सम्मान पाते हैं क्योंकि शंकित और देशद्रोह का दाग़ बहुत बड़ा दाग़ है।"।

(अनवारुल इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 23-24)

फिर इस बात का वर्णन कहते हुए कि एक मोमिन के तक्वा की गुणवत्ता बहुत ऊंची होती है और दुश्मनों से तकलीफों के बावजूद वह हर प्रकार की बुराई का मुकाबला करते हैं और दुश्मनों की तकलीफों की परवाह नहीं करते दूसरों की तरफ से दुखों के बावजूद वे उन की ग़लतियों पर क्षमा के लिए तैयार होते हैं दंगे नहीं फैलाते बल्कि शांति के राजदूत ही बने रहते हैं। आप फरमाते हैं कि

"बेशक याद रखो कि मोमिन मुत्तकी के दिल में बुराई नहीं होती मोमिन जितना मुत्तकी होता है उतना ही वह किसी के बारे में सज़ा और कष्ट को पसंद नहीं करता" तक्वा बढ़ता है तो सहानुभूति बढ़ती चली जाती है दुश्मन की भी सज़ा और पीड़ा को पसन्द नहीं करता। फरमाया कि "मुसलमान कभी वैर वाला नहीं हो सकता।" वास्तविक मुसलमान है जो वैर वाला नहीं हो सकता हां "दूसरी जातियां ऐसी वैर वाली होती हैं कि उनके दिल से दूसरे की बात वैर की कभी नहीं जाती और बदला लेने के लिए हमेशा कोशिश में लगी रहती हैं लेकिन हम देखते हैं कि हमारे विरोधियों ने हमारे साथ क्या किया है कोई दु:ख और पीड़ा जो वे दे सकते थे उन्होंने पहुंचाई लेकिन फिर भी उनकी हज़ारों ग़लतियां हम अभी भी क्षमा करने को तैयार हैं। अत: जो मेरे साथ संबंधित हो याद रखो कि तुम हर व्यक्ति चाहे वह किसी धर्म का हो सहानुभूति करो और बिना भेद धर्म और क़ौम प्रत्येक से भलाई करो।

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 285)

दूसरे मुसलमान तो बिना लीडर के हैं और इसलिए उन में बिगाड़ पैदा हो रहा है और तक्वा से दूरी हो रही है लेकिन हम जो अहमदी मुसलमान हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने एक लीडर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रूप में प्रदान फरमाया है हमारा हर कर्म इस्लामी शिक्षा के अनुसार होना चाहिए और हमारी हर बात तक्वा पर आधारित होनी चाहिए। अस्थायी और क्षणिक जोशों से हमें हमेशा बचना चाहिए। अपने दिल हमें टटोलना चाहिए कि उनमें कितना तक्वा है।

फिर इस बात का वर्णन कहते हुए कि तक्वा क्या है और वास्तविक तक्वा की निशानी क्या है और प्रत्येक नेक और मुत्तकी को कैसे अभिव्यक्ति करनी चाहिए। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"वास्तविक तक्वा के साथ जाहिलियत जमा नहीं हो सकती। वास्तविक तक्वा अपने साथ एक नूर रखता है जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّ يُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

(सूरह: अल्फाल:30)

अर्थात हे ईमान लाने वालो ! अगर तुम मुत्तकी होने पर दृढ़ रहो और अल्लाह तआला के लिए तक्वा के गुण में स्थिरता धारण करो तो ख़ुदा तआला तुम में और तुम्हारे ग़ैरों में अंतर रख देगा। वह अंतर यह है कि तुम को एक नूर दिया जाएगा, जिस नूर के साथ तुम अपनी सभी राहों में चलोगे अर्थात वह ज्योति तुम्हारे सारे कार्यों और बातों और शक्तियों तथा होश मा आ जाएगी।(हर काम और हर बात में फिर नूर होगा। "तुम्हारी अक्ल में भी नूर होगा और तुम्हारे एक अनुमान की बात में भी नूर होगा तुम्हारी आँखों में ज्योति होगी तुम्हारे कान और तुम्हारी ज़बानें और तुम्हारे बयानों और तुम्हारी प्रत्येक हरकत और आराम में नूर होगा और जिन राहों में तुम चलोगे वह राह रोशन हो जाएंगी। अत: जितनी तुम्हारी राहें, तुम्हारी शक्तियों के मार्ग, तुम्हारे होश के मार्ग हैं वे सब नूर से भर जाएंगे। (अर्थात कि अपने हाथ-पैर शरीर जो भी तुम हिलाओगे वह नूर पाने के लिए या नूर फैलाने के लिए ही होंगे। तुम्हारी सोचें केवल नूर फैलाने वाली होंगी और नूर से भर जाएंगी) और साक्षात नूर में ही चलोगे।"

(आइना कमालात इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 177.178)

अत: अगर हमारी बातों में दूसरों की तरह बुद्धि से हटकर केवल उत्साह है तो यह तक़वा नहीं है हमारा कर्म अगर इस्लामी शिक्षा के अनुसार नहीं तो यह तक़वा नहीं है। हमारी कथनी और करनी में यदि अल्लाह तआला का नूर व्यक्त नहीं तो हमें अपने तक्वा की चिंता करनी चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में यदि हम ज़माने के इमाम की बताई हुई नसीहतों और निर्देशों का पालन नहीं कर रहे तो हम इस नूर से दूर चले जाएंगे जो अल्लाह तआला से इस आज्ञाकारिता के कारण हमें मिलना है। इसलिए हमें पहले अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है अगर हमारे तक्वा की गुणवत्ता इतने बुलंद हो चुके हैं कि जहां हमें अल्लाह तआला का नूर दिखाई दे हमें यह देखने की ज़रूरत है कि हमारी दुआएं विनम्रता की उन सीमाओं को छू रही हैं जो एक सही दुआ करने वाले के लिए चाहिए जो अल्लाह तआला चाहता है तो हमें इस बात पर यकीन होना चाहिए कि अल्लाह तआला की मदद और सहायता क़रीब है और अल्लाह तआला ही हमारे लिए देश भी बनाएगा और हमारे लिए ज़मीनें भी प्रशस्त करेगा। इंशा अल्लाह और अगर इससे हटकर हम प्राप्त करना चाहते हैं या चाहेंगे हैं तो कुछ नहीं मिलेगा। हमारे सामने इन संगठनों के उदाहरण हैं जो इस्लाम के नाम पर और अनगिनत संसाधन के साथ मिलयनज़ बिलियनज़ डॉलर और पाऊंड खर्च करके इस्लामी सरकारें स्थापित करना चाहती हैं लेकिन सिवाय दंगों अत्याचार बर्बरता के उन्हें कुछ नहीं मिला। अस्थायी कब्ज़े भी हुए तो भी हाथ से निकल गए। ये इस्लाम को बदनाम करने वाले तो कहलाते हैं दुनिया में इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं इस्लाम की सेवा करने वाले को कोई नहीं कहता। इस्लाम की सेवा और इस्लाम का प्रकाशन अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा और आप की जमाअत के माध्यम से मुकद्दर है और यह तभी संभव है जब हम अल्लाह तआला के भेजे हुए फरस्तादे के नक्शे कदम पर चलें अन्यथा सांसारिक मामले में हम जितनी कोशिश कर लें, न हमारे पास ताकत है न संसाधन हैं कि हम कुछ प्राप्त कर सकें लेकिन अगर हम तक्वा पैदा कर लेंगे तो हम अपने दिलों में अल्लाह तआला का डर पैदा कर लेंगे। अगर हम अपनी दुआओं को छोर तक पहुंचाने वाले होंगे तो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुरआन के हवाले से फरमाया है कि हमें वह नूर और शक्तियां प्रदान होंगी जिसका कोई बड़ी से बड़ी ताकत भी मुकाबला नहीं कर सकती और अल्लाह तआला का यह फरमान भी है कि اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ (सूर: अल्हुजरात 14) कि अल्लाह तआला के नज़दीक तुम में सबसे अधिक प्रतिष्ठित वही है जो सबसे मुत्तकी है तो क्या अल्लाह तआला ग़लत कहता है? एक तरफ तो वह मुत्तकी को सम्मानित कहे और दूसरी तरफ दुनिया वालों के सामने उन्हें अपमानित करके छोड़ दे। निश्चित रूप से नहीं। यह ठीक है कि नबियों और उनकी जमाअतों को दुनिया वालों के विरोध का सामना करना पड़ता है जिस तरह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद उल्लेख किया है मगर क्या हर अवसर पर दुश्मन ख़ुद पराजित और अपमानित नहीं हुआ? क्या प्रत्येक जो जमाअत की तरक्की में रोक लगाने के लिए खड़ा हुआ या हर रोक जो जमाअत की तरक्की में डाली गई उससे जमाअत अधिक फैली और फूली

नहीं? आंतरिक उपाय भी विरोधियों ने आज़माए बाहरी हमले भी लेकिन जमाअत तरक्की के राजमार्गों पर कदम मारते हुए आज 209 देशों में स्थापित हो चुकी है। अगर एक जगह से दबाते हैं तो दस अन्य स्थानों में पहले से बढ़कर फैलने का अल्लाह तआला सामान और अवसर प्रदान कर देता है। अल्लाह तआला तो कहता है कि मैं एक साधारण व्यक्ति को जो तक्वा में बढ़ा हुआ है बिना सम्मान देने के नहीं छोड़ता तो जिस व्यक्ति को ख़ुद ख़ुदा तआला ने भेजा है और पिछले सवा सौ साल से हम जिसके साथ अल्लाह तआला के समर्थन देख रहे हैं आज अल्लाह तआला उनकी जमाअत के बाकी वादे पूरे किए बिना छोड़ देगा तथा बिना सम्मान के छोड़ देगा। यह कभी नहीं हो सकता लेकिन जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि यह सब कुछ दृढ़ कदम और स्थिरता से मिलेगा। यह शर्त है। अगर हम दृढ़ता पूर्वक अल्लाह तआला का दामन पकड़े रहेंगे तो दुश्मन की धूल उड़ते भी हम इंशा अल्लाह तआला देखेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"अगर तुम्हारा जीवन और तुम्हारी मौत और तुम्हारी हर एक हरकत और तुम्हारी नरमी और गर्मी" (अर्थात अच्छा मिज़ाज भी और ग़ुस्सा भी) "केवल ख़ुदा तआला के लिए हो जाएगी" (निजी स्वार्थों के लिए किसी पर ग़ुस्सा न हो न किसी सांसारिक वस्तु को देखकर ख़ुश हो जाओ अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए ये चीज़ें हों) तो फिर फरमाया कि "प्रत्येक कड़वाहट और विपत्ति के समय तुम ख़ुदा की परीक्षा नहीं करोगे और संबंध को नहीं तोड़ोगे बल्कि आगे कदम बढ़ाओगे तो मैं सच सच कहता हूं, कि तुम ख़ुदा की एक विशेष क़ौम हो जाओगे तुम भी इंसान हो जैसा कि मैं इंसान हूँ और वही मेरा ख़ुदा तुम्हारा ख़ुदा है। इसलिए अपनी पवित्र शक्तियों को बर्बाद मत करो। अगर तुम पूरी तरह से ख़ुदा की इच्छा के अनुसार देखोगे तो मैं तुम्हें कहता हूँ कि तुम ख़ुदा के एक चुने हुए लोग हो जाओगे। ख़ुदा की महिमा अपने दिलों में बिठाओ और उसकी तौहीद की स्वीकारोक्ति न केवल ज़बान से बल्कि व्यावहारिक रूप से करो तो ख़ुदा भी वस्तुत: अपना लुत्फ़ व एहसान तुम पर प्रकट करे।

(रिसाला रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 308)

अत: हम में से हर एक को अपनी अवस्थाओं में परिवर्तन लाने की ज़रूरत है जो कमज़ोर हैं वे अपनी समीक्षा करें जो अपने आप को बेहतर समझते हैं वे भी नेकियों में बढ़ने के और अधिक रास्ते खोजें कि केवल अल्लाह तआला ही जानता है कि बेहतर कौन और कहां तक हमारे जो उद्देश्य हैं हम ने हासिल किए हैं। अल्लाह तआला हमें एक जगह ठहरा हुआ नहीं देखना चाहता यह किसी को नहीं होना चाहिए कि मैं अब बेहतर हो गया और नेकियों में बढ़ रहा हूँ या नेकियों को प्राप्त कर लिया है हमें अपने मानकों को उच्च करने के लिए ध्यान देने की ज़रूरत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"ख़ुदा ने मुझे संबोधित करके कहा कि मैं अपनी जमाअत को सूचना दूँ कि जो लोग ईमान लाए ऐसा ईमान जिस के साथ दुनिया की मिलावट नहीं और वह ईमान पाखंड या कायरता से मिला हुआ नहीं और वह ईमान आज्ञाकारिता के किसी स्थिति से वंचित नहीं ऐसे लोग ख़ुदा के पसंदीदा लोगों हैं और ख़ुदा फरमाता है कि वे वही हैं जिनका कदम ईमानदारी का कदम है।"

(रिसाला रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 309)

अत: इस सच्चाई के कदम पर हमें चलने की जरूरत है ताकि वही जीत के नज़ारे हम कर सकें जो हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ जुड़े हैं जो अल्लाह तआला ने आप के लिए मुकद्दर किए हुए हैं। यह परीक्षाओं का दौर वास्तव में ख़त्म होने वाला दौर है लेकिन इसमें तेज़ी लाने के लिए हमें अपने तक्वा के मानकों को बढ़ाने और बढ़ाते चले जाने की ज़रूरत है। बेशक अल्लाह तआला ने इस ज़माना में यह जमाअत इसलिए स्थापित फरमाई है कि इस्लाम का दुनिया में बोलबाला हो और इस्लाम दुनिया में फैले और सब धर्मों पर इस्लाम विजयी हो। अल्लाह तआला ने हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह वादा किया है कि इस जमाअत ने बढ़ना है फलना है और फूलना है और कोई सांसारिक शक्ति इसे खत्म नहीं कर सकती।

आप फरमाते हैं कि "यह मत विचार करो कि ख़ुदा तुम्हें बर्बाद कर देगा" (यह मत विचार करो कि ख़ुदा तुम्हें बर्बाद कर देगा।) तुम ख़ुदा के हाथ का एक बीज हो जो धरती में बोया गया। ख़ुदा कहता है कि यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा और प्रत्येक ओर से उसकी शाखें निकलेंगी और एक बड़ा पेड़ हो जाएगा।"

(रिसाला रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 309)

अल्लाह तआला करे कि हम में से हर एक इस पेड़ की फलने फूलने वाली शाखा बन जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत से जो उम्मीदें हैं उन को हम पूरा करने वाले हों। तक्वा में तरक्की करने वाले हों और धैर्य और दुआ के साथ दुश्मन के हर हमले को नाकाम और असफल करते चले जाने वाले हों।

नमाज़ों के बाद नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय मलिक ख़ालिद जावेद साहिब पुत्र आदरणीय मलक अय्यूब अहमद साहिब दोलमियाल ज़िला चकवाल का है। मलिक खालिद जावेद साहिब 69 साल की आयु में 12 दिसंबर 2016 को दारुल ज़िकर दोलमियाल ज़िला चकवाल में दिल की हरकत बंद हो जाने के कारण वफात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। जानकारी के अनुसार 12 दिसंबर 2016 ई 12 रबीउल अव्वल को विरोधियों ने दोलमियाल ज़िला चकवाल में विशाल जुलूस निकाला और नियमित योजना के तहत अपना निर्धारित रूट बदलकर अहमदिया दारुल ज़िकर पर हमला किया। अहमदिया मस्जिद पर हमला किया और मस्जिद के बाहर आकर भड़काऊ नारेबाज़ी और पथराव शुरू कर दिया तथा मस्जिद के गेट को तोड़ने लगे। दूसरी ओर हमारे लोग भी थे उनमें यह ख़ालिद साहिब भी शामिल थे। तो मरहूम के परिवार के अनुसार मरहूम को पहले दिल की तकलीफ कभी नहीं थी और न कभी दिल की कोई दवा लेते थे और न ही कभी इलाज किया और जब यह विरोधी हमला कर रहे थे। मृत्यु से पहले यह मस्जिद के अंदर से एक ही बात लगातार दोहरा रहे थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ इस कदर बुरी और गन्दी ज़बान बर्दाश्त नहीं कर सकता। इन शब्दों के साथ ही वह बेहोश हो गए। बाहर हज़ारों की संख्या में मौजूद भीड़ और तनाव पूर्ण परिस्थितियों के कारण ख़ालिद जावेद साहिब को मेडिकल परीक्षा के लिए या चिकित्सा के लिए ले जाया नहीं जा सका। इस स्थिति में आदरणीय ख़ालिद जावेद साहिब की मृत्यु हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप के परिवार में अहमदियत का आरम्भ आप की दादी आदरणीया मानो बी साहिबा के माध्यम से हुआ जो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मौलाना मौलवी करम दाद साहब की भांजी थीं जो दोलमियाल जमाअत के संस्थापक अहमदियों में से थे।

पाकिस्तान में तो प्रतिबंध हैं लिखने वाले रिपोर्ट देने वाले भेजते हैं कि सहाबी को रफीक लिखते हैं और मस्जिद को दारुलज़िकर। इन की यह रिपोर्ट टाइप करके जो दफतर मुझे देता है तो यह सुधार दिया करे जो सही इस्लामी शब्द हैं वे ही उपयोग किए जाएं।

मरहूम अल्लाह तआला के फज़ल से जन्मजात अहमदी थे उच्च विशेषताओं के मालिक थे। आज्ञाकारिता और अनुपालन के साथ ख़िलाफत से अत्याधिक प्यार और ईमानदारी प्रमुख विशेषता थी। दैनिक पांचों नमाज़ों के अतिरिक्त तहज्जुद और ऊंची आवाज़ में तिलावत कुरआन के आदी थे। एक लंबा समय लगभग बीस साल यह शारजाह में रोज़गार के सिलसिले में रहे फिर पिछले बीस साल से दोलमियाल वापस आ गए थे और उनका अक्सर समय कई वर्षों से मस्जिद में ही बीतता था। इस दौरान जमाअत के कामों को करना और मस्जिद की सुरक्षा और अन्य जमाअत के मामलों में हमेशा आगे रहे। कुरआन से विशेष प्रेम था अपने एक बेटे सुब्हान अय्यूब साहिब को भी कुरआन याद करवाया। मरहूम इस समय सैक्रेटरी तालीमुल कुरआन के रूप में सेवा की तौफीक पा रहे थे और इसके अतिरिक्त भी विभिन्न रूपों से उन्हें जमाअत की सेवा की तौफीक मिली। पीछे रहने वालों में पत्नी प्रिय अज़रा बेगम साहिबा के अतिरिक्त दो बेटे सलमान खालिद जो यहाँ यू.के में रहते हैं और हाफिज़ सुब्हान अय्यूब और दो बेटियां निदा मरियम और हिरा मरियम शोक संतप्त छोड़े हैं। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और उनके वंश में भी यह नेकियाँ जारी करे।

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 2 Thursday 26 January 2017 Issue No. 4

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

इन्साफ़ के हवाले से हज़रत ख़दीजा रज़ि और हज़रत सफिया रज़ि की गवाही पेश की और पत्नियों के साथ प्यार व मोहब्बत के व्यवहार का उल्लेख फरमाया। आप ने आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत-ए-तैयबा से न्याय व इंसाफ़ संबंधित कुछ ईमान वर्धक घटनाएं बयान कीं और फ़रमाया कि आज न्याय व इंसाफ़ को स्थापित करने की जिम्मेदारी हम अहमदियों पर है आखिर में आपने " गवर्मेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद" से एक उद्धरण पेश करके अपने भाषण को समाप्त किया।

इस के बाद जमाअत अहमदिया किर्गिस्तान के प्रतिनिधि आदरणीय उस्मान तुलाई बैग साहिब ने परिचयात्मक भाषण दिया। आप ने वहां होने वाली एक शहादत का ज़िक्र करते हुए किर्गिस्तान में जमाअत की तरक्की के लिए दुआ का अनुरोध किया। बाद में अध्यक्ष की अनुमति से जलसा समाप्त हुआ।

पहला दिन- दूसरा सत्र

पहले दिन के दूसरे सत्र की अध्यक्षता मोहतरम मौलाना मोहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला तथा अमीर जमाअत अहमदिया कादियान ने की। आदरणीय हाफिज़ नईम पाशा साहिब ने सूर: अस्सफ की आयत 7 से 10 की तिलावत और अनुवाद पढ़कर सुनाया। बाद में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

तुझे हम्दो सना जैबा है प्यारे
कि तूने काम सब मेरे संवारे

आदरणीय तनवीर अहमद नासिर साहिब ने बहुत अच्छी आवाज़ा में पढ़ा।

इस बैठक की पहली तकरीर आदरणीय मौलाना मुज़फ्फर अहमद नासिर साहिब नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया ने "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाकत अल्लाह तआला के समर्थन की रोशनी में" के शीर्षक से की। आप ने तकरीर के शुरू में सूरे अलमुजादल: की आयत كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ك की तिलावत की और कहा कि अल्लाह तआला की पवित्र सुन्नत और इस के कानून की रोशनी में जब हम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावों पर विचार करते हैं तो आप की प्रामाणिकता हमें दिन की रोशनी की तरह दिखती है और आप की उपलब्धियों को देखकर इस बात में किसी प्रकार का कोई शक ही नहीं रहता कि आप अल्लाह तआला के फरस्तादा हैं। आपका नाम कोई नहीं जानता था, लेकिन अल्लाह तआला ने दुनिया के किनारों तक आपको प्रतिष्ठा दी। एक दुनिया आप की जान की दुश्मन हो गई मगर अल्लाह तआला ने अपनी सुरक्षा फ़रमाई। आप पर मुकदमे किए गए मगर अल्लाह तआला ने आपको सम्मान दिया और दुश्मन विफल हुए और इस्लाम के प्रकाशन और धर्म के प्रचार के लिए आप को मुख़लेसीन की जमाअत दी गई है।

इजलास की दूसरी तकरीर आदरणीय मौलाना मुनीर अहमद ख़ादिम साहिब (एडीशनल नाज़िर इस्लाहो इरशाद दक्षिण भारत) ने "सीरत हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो और सीरत हज़रत शेख याकूब अली साहिब इरफानी रज़ि" शीर्षक पर की। हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की सीरत बयान करते हुए आपने कहा कि आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उन बुज़ुर्ग सहाबा में से थे जो बाद में आकर भी आगे निकल गए। आप का असली नाम अबदुल श्मस था। ईमान के बाद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप का नाम अब्दुर्रहमान रखा। आप का संबंध यमन के दोसी कबीला से था। आप को लगभग तीन साल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप तमाम समय मस्जिद में बिताते। कहीं बाहर जाना पसंद नहीं करते, ताकि ऐसा न हो कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कोई बात फरमाए और आप सुन न सकें। यही कारण है कि आप ने तीन साल की अवधि में इतनी हदीसें बयान कीं कि आपसे अधिक समय संगत पाने वालों ने बयान नहीं कीं।

हज़रत शेख याकूब अली साहिब इरफान रज़ि अल्लाह की सीरत बयान करते हुए आप अपने तकरीर में कहा कि आपका जन्म 1872 ई में ज़िला जालंधर में हुआ और आपकी मृत्यु 1957 ई में सिकंदराबाद प्रांत तेलंगाना में हुई। 1889 ई में बैअत की तौफीक मिली। आपको 19 साल अपने महबूब इमाम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुबारक सोहबत में रहने, आप से लाभान्वित होने और आपकी आज्ञाकारिता में बहुमूल्य ज्ञान वर्धक सेवाएं करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बाद 48 साल ख़िलाफत अहमदिया की छत्र छाया में भव्य सेवाओं की आप को तौफीक मिली। 1897 में ऐतिहासिक अख़बार अलहकम कादियान से जारी किया। आप को पत्रकारिता के साथ तफसीर कुरआन और संकलन व लेखन के काम का भी बहुत शौक था। आप ने देश के अख़बारों में लिखित मुनाज़रे भी किए।

बैठक की तीसरी और अंतिम तकरीर "वसीयत की प्रणाली का महत्त्व" के शीर्षक से आदरणीय मौलाना ज़ैनुद्दीन हामिद साहिब (नाज़िम दारुल कज़ाए कादियान) ने की। आप ने फरमाया कि इस्लाम की खोई हुई गरिमा को फिर से स्थापित करने और इसे पूरी दुनिया में प्रमुख करने के लिए अल्लाह तआला ने इस ज़माने में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कादियान की पवित्र बस्ती में भेजा। इस भव्य लक्ष्य की पूर्ति के लिए अल्लाह तआला ने कई धरती और आकाश के माध्यमों से आपका समर्थन और सहयोग फ़रमाया। उनमें से एक भव्य आसमानी प्रणाली वसीयत है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की आज्ञा से 1905 में वसीयत की आसमानी प्रणाली जारी की। वसीयत प्रणाली ख़िलाफत के अधीन एक प्रणाली है जो धार्मिक और आध्यात्मिक सुधार और तरक्की के साथ ही दुनिया की आर्थिक समस्याओं का सही समाधान प्रस्तुत करती है। आप इस संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और सम्माननीय ख़लीफ़ाओं के उपदेश भी प्रस्तुत किए।

बाद में निम्नलिखित मेहमानो की परिचयात्मक तकरीरें हुईं।

(1) आदरणीय डॉक्टर मोहम्मद इस्माईल साहिब उप राष्ट्रीय अध्यक्ष नेपाल आपने कहा कि पहले नेपाल में राजशाही थी और तब्लीग़ की अनुमति नहीं थी। अब वहां लोकतंत्र है। आप ने कहा कि नेपाल में अल्लाह तआला की कृपा से बहुत काम हो रहा है। जमाअत के केंद्र स्थापित हैं। मस्जिदें बनी हैं। होम्योपैथी डिस्पेनसरियां स्थापित हैं। एक मिडिल स्कूल भी जारी है। नेपाल में जलसा सालाना की भी शुरुआत की गई है। कुरआन करीम का नेपाली भाषा में अनुवाद किया गया है। जमाअत का साहित्य भी नेपाली भाषा में प्रकाशित होना शुरू हुआ है। इस साल 56 आदमी नेपाल से कादियान के जलसे में सम्मिलित हुए हैं।

(2) आदरणीय सियोती साहिब ऑफ इंडोनेशिया ने अपनी तकरीर में कहा कि सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 25 दिसंबर 2015 में फरमाया था कि " और यह भी दूर नहीं कि किसी समय चार्टर्ड फलाईटस चला करें और कादियान के जलसा में लोग शामिल हुआ करें।" अल्लाह तआला ने इंडोनेशिया के मित्रों को यह तौफीक़ दी कि वह चार्टर्ड प्लेन द्वारा जलसा सालाना कादियान में भाग लेते हैं। उन्होंने ने सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद और सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह बेनसरहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बा जुम्अ: के हवाले से उपरोक्त भविष्यवाणी के पूरा होने का ईमान वर्धक घटना का उल्लेख किया।

(शेष अगले)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad